६० वर्षों से ज्ञान-विज्ञान तथा मनोविनोद को प्रकीर्ण करनेवाली विशिष्ट पत्रिका

TEST YOUR IQ
Who was the Indian representative in the UN who first mooted the idea of a Universal Children's Day?
Who was the founder of the Swatantra Party?
By adding what colour to which colour can we get brown?
Which is the north-eastern state which has earned the sobriquet "Switzerland of India"?
When does India celebrate Children's Day every year?
What was the original name of Tatia Tope?
Which is the largest squirrel? And which is the smallest?
If you feel you are stumped, don't worry, you'll get all the answers in Junior Chandamama November 2006 issue. Go, grab a copy!
Junior
CHANDAMAMA
THE ONE-STOP COMPLETE FUN AND ACTIVITY MAGAZINE
NOW AVAILABLE AT YOUR NEAREST NEWS STAND FOR
RS.15 PER COPY
PAY ONLY RS.150 FOR ANNUAL SUBSCRIPTION AND SAVE RS.30
For Further Details write to :
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
82, Defence Officer's Colony,
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.
Junior
CHANDAMAMA
CHILDREN AND PETS

NOW AVAILABLE AT ALL LEADING BOOK SHOPS

Hiya! What has hit the animal world?

Listen hard and look keenly.

Do you hear the jingle of the jungle?

JUNGLE JINGLES
The Cunning Pelican
and other stories

Each book priced Rs.35/- only

A set of five story books
with the whackiest and most interesting
collection of animal stories ever written —
for Rs.175/- only

FOR FURTHER ENQUIRIES CONTACT :
CHANDAMAMA INDIA LTD., 82, DEFENCE OFFICERS COLONY,
CHENNAI - 600 097.

चन्दामामा

सम्पुट-५७ नवम्बर २००६ सञ्चिका - ११

अंतरंग

विशेष आकर्षण
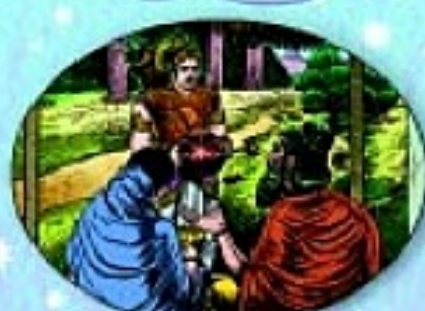
SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd. to

Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal,
Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १५० रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागि रेड्डी और चक्रपाणि

निरापद जीवन की ओर

भारतीय बच्चों के लिए सितम्बर, अक्तूबर तथा नवम्बर के महीने महत्वपूर्ण होते हैं। पाँच सितम्बर को, वे आधुनिक भारत के एक महान शिक्षक डॉ. राधाकृष्णन के जन्मदिवस की स्मृति में, शिक्षक दिवस मनाते हैं। शिक्षक ही बच्चे का चरित्र-निर्माण करता है। हमारे शास्त्र बताते हैं: आचार्य देवो भव- शिक्षक का देवता के समान आदर करो।

दो अक्तूबर को गाँधी जयन्ती के अवसर पर बापू के, जैसा कि उन्हें सब प्यार से पुकारते थे, जीवन को याद करते हैं। उनका जीवन सादा था और उन्होंने देश के स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व करने के लिए बड़े-बड़े बलिदान किये। भारत को स्वाधीन कराने में उन्हें सफलता प्राप्त हुई और देश के जनमानस ने उनमें राष्ट्रपिता की छवि देखी। उनके बलिदानों के कारण यहाँ के नागरिकों के लिए आत्म सम्मान के साथ जीना सम्भव हो सका।

प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने राष्ट्र केस्वास्थ्य के साथ-साथ बच्चों के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखा। बच्चों के लिए उनके हृदय में एक विशेष स्नेह था, इसलिए उन्होंने उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के विकास की हिमायत की। बच्चे उन्हें प्यार से चाचा नेहरू कहकर पुकारते थे। उन्हें प्रत्येक बच्चे में एक विकासशील नागरिक नजर आता था। १४नवम्बर को उनका जन्मदिन बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है।

चन्दामामा को आशा है कि राष्ट्र के विकास और शान्ति की स्थापना में अपना यथाशक्ति श्रेष्ठ योगदान करने की तुम सब शपथ लोगे, जिससे आगामी पीढ़ी निरापद जीवन व्यतीत कर सके।

सम्पादक : विश्वम

Visit us at : http://www.chandamama.org

पाठकों का पन्ना

ओम उपाध्याय, भोपाल से

करीब ६० वर्षों से मैं चन्दामामा का प्रबल प्रशंसक रहा हूँ। बचपन में, मैं हर कहानी को अनेक बार पढ़ा करता था, यहाँ तक कि कण्ठस्थ कर लेता था। आश्चर्यजनक चित्रों के साथ उन अविस्मरणीय कहानियों को पढ़कर मैं अपनी काल्पनिक दुनिया में खो जाता था। अधिकांश पात्र मेरे लिए वास्तविक जीवन के नायक होते थे।

आज मैं स्वयं एक बहुसर्जक लेखक हूँ और कहने की आवश्यकता नहीं है कि*चन्दामामा* से मिली प्रेरणा को ही मेरे वर्तमान व्यवसाय का श्रेय जाता है। मुझे दुख है कि अपने बचपन में जैसी कहानियाँ मैं पढ़ा करता था, उनसे भिन्न कहानियाँ मैं नहीं पढ़ पाता। बेताल और पौराणिक कथाएँ आज भी मुझे प्रिय हैं। मेरी कामना है कि *चन्दामामा* निरन्तर चमचमाता रहे। सम्पादक तथा उनके सहयोगी-समूह को जिन्होंने *चन्दामामा* की चमक को बरकरार रखा है, मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

पी.बी.मोहन, चेन्नई से

मैं पिछले ३५ वर्षों से *चन्दामामा* का प्रशंसक हूँ। मैं पुराने अंकों को पाना चाहता हूँ। मुझे पता चला है कि पुराने अंकों को डिजिटलाइज किया जा रहा है। मैं उन डिजिटलाइज्ड संस्करणों को खरीदना चाहूँगा।

डिजिटलाइजेशन कार्य किया जा रहा है। बिक्री के लिए तैयार होने में तीन-चार महीने और लग सकते हैं। *-सम्पादक*

प्रधानाध्यापिका खापरे छाया, कर्नाटक से

हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि *चन्दामामा* शीघ्र ही अपनी ६० वीं जयन्ती मनायेगा। मैं बच्चों के सर्वांगीण विकास में आप के भव्य और गौरवपूर्ण योगदान के लिए आप को व्यक्तिगत रूप से बधाई देती हूँ। इस मूल्यवान योगदान को सम्भवतः इनफोसिस द्वारा मान्यता प्राप्त हो गई है।

ई-मेल खुशबू, पटना से

प्रकाशन के ६० वें वर्ष में प्रवेश पर बधाई! मैं आपकी पत्रिका की उत्साही पाठिका हूँ। दिलचस्प कहानियाँ कहते रहिये।
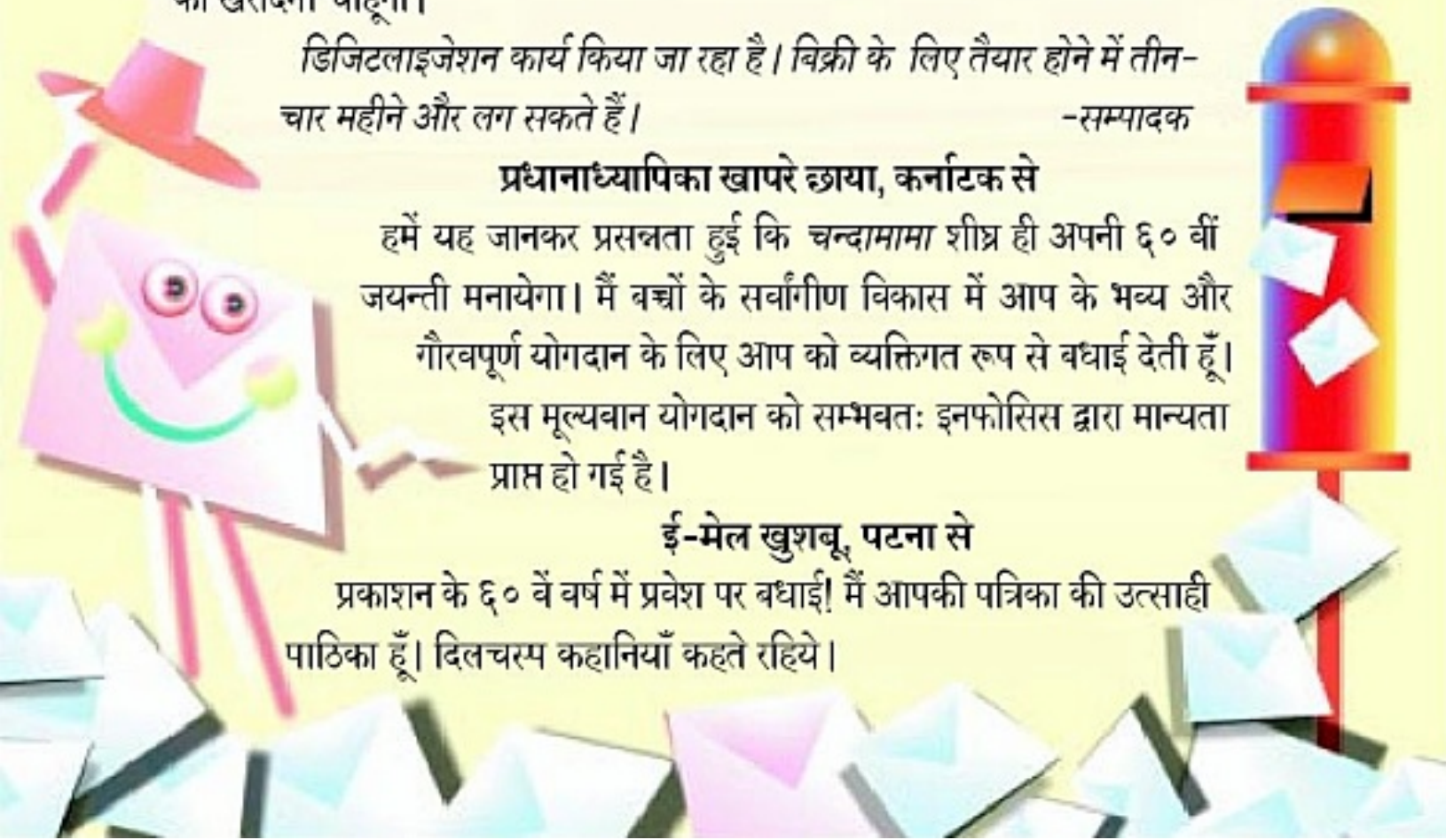
आदर

श्रीधाम जनकपुरी का निवासी था। वह बड़ा ही संपन्न था। मदन और मंगल उसके दो बेटे थे। दोनों ने अच्छी शिक्षा प्राप्त की और बिबेकी माने जाने लगे। श्रीधाम ने उनका बिबाह तो करवाया, पर जायदाद खुद ही संभालने लगा।

श्रीधाम की पत्नी रमादेवी ने एक दिन पति से कहा, ''हमारे दोनों बेटे समझदार हैं, पर पता नहीं, जायदाद उनके हाथ में आ जाए तो उनका व्यवहार कैसा होगा; उनमें क्या परिवर्तन होगा। हमें यह जानना है कि अभी की तरह आगे भी हमारे प्रति आदर होगा या नहीं। इस विषय में हमें उनकी परीक्षा लेनी होगी।'' पत्नी की सलाह को मानते हुए श्रीधाम ने घर को तीन हिस्सों में बाँट दिया।

बीच के हिस्से में वह खुद रहने लगा और दोनों तरफ़ के हिस्सों में उसके बेटे पत्नी समेत रहने लगे।

जायदाद संबंधी काम भी बेटों के सुपुर्द कर दिया और देखने लगा कि वे कैसे संभाल रहे हैं।

मदन हमेशा जायदाद को औरबढ़ाने के उपाय सोचने लगा और पिता से बताता रहा। उनकी अनुमति प्राप्त होने के बाद ही वह उन उपायों को अमल में लाता था। सफलता मिलती रही। इसलिए मदन समर्थ और योग्य कहलाया।

मंगल सबेरे उठते ही श्रीधाम के पिता सुदामा की तस्वीर को प्रणाम करता था। सुदामा के नाम पर दान भी देता था, इसके लिए वह पिता की अनुमति नहीं लेता था। वह अपने को सुदामा का पोता कहता था। अपना नाम नहीं बताता था।

एक साल के बाद, जब श्रीधाम पत्नी समेत तीर्थ-यात्रा के लिए निकलने लगा, तब उसने जायदाद को दो हिस्सों में बाँट दिया। छोटा हिस्सा बड़े बेटे मदन को और बड़ा हिस्सा छोटे बेटे मंगल को दिया। इसपर मदन निराश हो

लक्ष्मीनारायण

चला गया। मंगल, सुदामा का इतना आदर करता है, यह जान मदन चकित रह गया।

अपने छोटे भाई से उसने कहा, ''दादा का जब निधन हुआ, तब तुम तीन साल के थे और मैं छे साल का। उनकी महत्ता को मैं जान नहींपाया, पर तुम कैसे जान गये जिससे उनके प्रति इतनी श्रद्धा रखते हो?''

''हमारे पिता को उन्होंने जन्म दिया, यह उनका बड़प्पन है। अपने पिता को संतुष्ट रखना हमारा कर्तव्य है,'' मंगल ने कहा।

इसके बाद, मदन ने इस विषय में खूब सोचा-विचारा। उसने सुदामा की दो तस्वीरें बनवायीं, जो मंगल के पास की तस्वीर से काफी बड़ी थीं। एक तस्वीर को अपने घर में लटकाया और दूसरी को गाँव के मंदिर के मंडप में लटकाने के लिए सौ अशर्फ़ियाँ दान में दीं। सुदामा के बड़प्पन के बारे में वह प्रचार भी करने लगा।

शंभु सीतापुर गाँव का किसान था। उस साल उसकी फसलें अच्छी नहीं हुईं, वह कर्जदार बन गया और आत्महत्या के अलावा उसके सामने कोई और मार्ग नहीं रहा। जब वह आत्महत्या करने जा रहा था, तब मंगल वहाँ आ गया और उसने उसकी रक्षा की। विषय जानने के बाद उसने शंभु से कहा, ''मेरे दादा सुदामा के नाम पर तुम्हें दस अशर्फ़ियाँ दूँगा। उस पूंजी से खेती करो। मेरे दादा की महिमा से तुम्हारी तकलीफ़ें दूर हो जायेंगी तो मेरी रक़म मुझे लौट देना।''

शंभु रक़म लेकर गाँव लौटा। दूसरे दिन जब

गया। उसकी पत्नी ने उसे कहा, ''जायदाद को दोनों बेटों में समान रूप से बाँटना चाहिये। नहीं तो, तुम बड़े हो, इसलिए तुम्हें बड़ा हिस्सा मिलना चाहिये। किन्तु तुम्हारे पिता ने ऐसा नहीं किया। तुम अपने पिता से शिकायत करो।'' मदन ने पत्नी की बात मान ली।

श्रीधाम ने बेटे की शिकायत सुनी और कहा, ''यह जायदाद मैंने कमायी। जैसे चाहूँगा, बाटूँगा। मैं तुम्हारे दादा, यानी अपने पिता के प्रति मेरी अपार श्रद्धा-भक्ति है। मंगल उनका आदर करता है, इसीलिए उसे बड़ा हिस्सा दिया। परंतु, यह बंटवारा तात्कालिक है। तीर्थ-यात्रा से लौटने के बाद, तुममें अगर सराहनीय परिवर्तन देखा तो हो सकता है, जायदाद का बड़ा हिस्सा तुम्हें मिले।'' यह कहकर वह सपत्नी तीर्थ-यात्रा पर

वह खेत जोत रहा था, उसे ज़मीन के अंदर गुप्त निधि मिली। उसने उसे ग्रामाधिकारी को दिखाया तो उसपर लिखे शब्दों को पढ़कर उसने शंभु से कहा, ''तुम्हारे पूर्वजों ने तुम्हारे लिए यह निधि सुरक्षित रखी। यह तुम्हारा ही है।''

अब शंभु का भाग्य खुला। वह जनकपुरी गया और मंगल को धन लौटा दिया। तब मंगल ने कहा, ''इसमें मेरी कोई महत्ता नहीं है। यह सब मेरे दादा सुदामाजी की महिमा है।'' शंभु ने हाथ जोड़ते हुए कहा, ''सुदामा की महिमा सब जानें, इसके लिए मैं अपने गाँव के मंदिर में उनकी तस्वीर का प्रतिष्ठापन करूँगा। उस अवसर पर उत्सव भी मनाऊँगा। यह सब आप ही की अध्यक्षता में होगा। आपको आना होगा।''

इतने में, तीर्थ-यात्रा पूरी करके, दो दिनों में गाँव लौटने का समाचार श्रीधाम ने बेटों को भेजा। इस समाचार के मिलने के पहले ही शंभु से उत्सव में भाग लेने के लिए मंगल को न्योता मिला। वह बड़े भाई को यह कहकर सीतापुर चला गया कि पिता के पहुँचने तक लौट आऊँगा।

पर, श्रीधाम जब घर आया, तब मंगल जनकपुरी में नहीं था। मदन ने माता-पिता का स्वागत किया। पिता ने जब मंगल के बारे में पूछा तो उसने शंभु का किस्सा सुनाया और कहा, ''आपके आगमन का समाचार जानने के बाद भी भाई सीतापुर चला गया।'' फिर बाद में उसने पिता के सम्मान में बड़ी दावत दी। लोगों ने उसकी पितृ भक्ति की वाहवाही की।

उस समय एक आदमी ने वहाँ आकर पूछा, ''मदन कौन है? कहाँ रहते हैं?'' तब मदन ने आगे आकर कहा, ''मैं ही मदन हूँ। क्या चाहिये?'' ''सीतापुर से सुदामा के पोते के भेजने पर यहाँ आया हूँ। उन्होंने कहला भेजा है कि कल शाम तक वे यहाँ पहुँच जायेंगे।'' श्रीधाम ने यह सुनकर उस आदमी से सीतापुर के उत्सव के बारे में विवरण जाने और कहा, ''वाह, मंगल बड़ों का कितना आदर करता है।''

दावत के बाद आक्रोश भरे स्वर में मदन ने कहा, ''आपके प्रति भाई ने जो आदर दर्शाया और मैंने आपको जो गौरव दिया, उसमें फर्क साफ़-साफ़ दिखाई देता है। जहाँ तक दादाजी की बात है, भाई ने उनके नाम पर दिये पैसे वापस ले लिये। वह सीतापुर गया है, शंभु से प्रतिष्ठापित
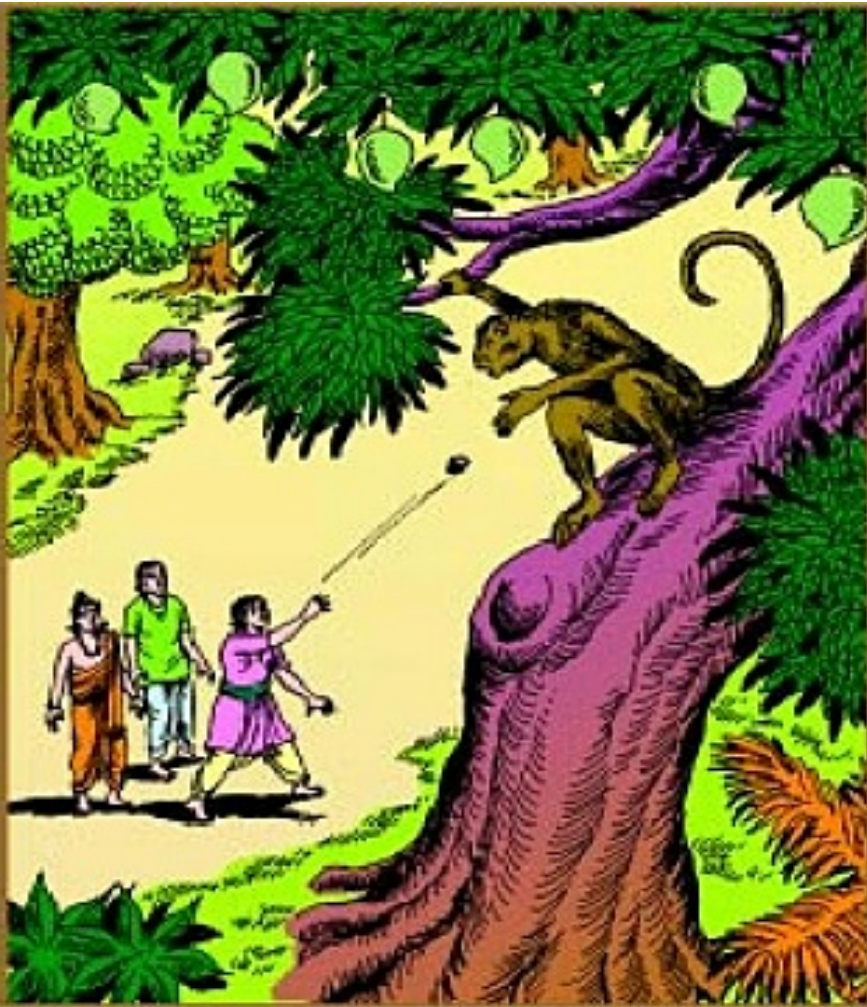
दादाजी की तस्वीर को देखने और मैंने सौ अशर्फ़ियाँ खर्च करके अपने गाँव के मंदिर में दादाजी की तस्वीर रखवायी। पर आप उसी की प्रशंसा कर रहे हैं।''

श्रीधाम ने मुस्कुराते हुए कहा, ''जो भी काम करते हो, अपने ही नाम पर करते हो और वह तो जो भी करता है, अपने दादा के नाम पर करता है। उनके बड़प्पन को और रोशन कर रहा है। फिर भी, मंगल के बड़प्पन को मानने से इनकार कर रहे हो! आदर क्या होता है, यह सीखना हो तो दंडकारण्य में गुरुकुल आचार्य सुमेध से मिलो। भाई के लौटने के बाद तुम दोनों उनके पास जाना। तुम्हारा संदेह दूर हो जायेगा।''

दूसरे दिन शाम को मंगल लौटा। दो दिनों के बाद, दोनों भाई दंडकारण्य जाकर आचार्य सुमेध से मिले। मदन के संदेहों को सुनने के बाद सुमेध ने कहा, ''तुम्हारे का बिचार है कि तुम्हारा भाई बड़ों का आदर तुमसे अधिक करता है। तुम दोनों कुछ दिनों तक मेरे शिष्य सुनाथ के साथ रहो और वह जैसा कहे, वैसा ही करो।'' कहते हुए आचार्य ने उन्हें सुनाथ के सुपुर्द कर दिया।

दूसरे दिन सुनाथ ने सूर्योदय के पहले ही उन्हें जगाया, ठंडे पानी से नहाने को कहा और फिर तीनों वहाँ गये, जहाँ सुमेध शिष्यों को पढ़ा रहे थे। पाठ सिखाने के बाद सुमेध ने उनसे कहा, ''अब तुम जंगल में जाओ और जो फल भूमि पर गिरे हैं, उन्हें इकट्ठा करो। पेड़ में जो फल हैं, उन्हें तोड़ना मत। हिंसा मत करना। जो आहार इकट्ठा किया, उसे सब मिलकर बांटकर खाना।''

मदन और मंगल, सुनाथ के साथ जंगल में गये। रास्ते में सुनाथ ने उनसे पेड़ पर चढ़कर फल तोड़ने के लिए कहा। मदन ने तोड़ने से इनकार करते हुए कहा कि मैं गुरु का कहा ही करूँगा। मंगल पेड़ पर चढ़ने ही वाला था कि एक बंदर उसपर लपकने लगा। सुनाथ के कहने पर उसने बंदर पर एक छोटा पत्थर फेंका। बंदर वहाँ से भाग गया। वह पेड़ पर चढ़ गया और सुनाथ ने जितना कहा, उतने फल तोड़े। ''हमने इन फलों को तोड़ने में काफी तकलीफ़ उठायी। इन्हें दूसरों को नहीं देंगे। हम ही खा लेंगे।'' सुनाथ ने कहा। मंगल ने 'हाँ' कहा। पर, मदन गुरु की आज्ञा के खिलाफ़ कुछ भी करने के लिए तैयार नहीं था। वह दौड़ता हुआ सुमेध के पास गया और जो

हुआ, सविस्तार बताया। सुमेध ने मंगल को बुलाया और कैफियत तलब की।

"गुरुवर, आपने आदेश दिया था कि जब तक मैं आश्रम में रहूँगा तब तक सुनाथ के आदेशों का पालन करूँ। मैंने आपके आदेश का पालन किया," मंगल ने कैफियत दी।

इसपर मदन ने कहा, "गुरु जब पाठ सिखा रहे थे, तब उन्होंने क्या-क्या आदेश दिये? उनका तुमने पालन किया?"

तब सुमेध ने मुस्कुराते हुए कहा, "मैंने जो पाठ सिखाये, वे केवल मेरे शिष्यों के लिए हैं, तुम्हारे लिये नहीं। तुम और मंगल यहाँ विद्यार्थी बनकर तो नहीं आये। मैंने तो तुम्हें यही आदेश दिया था कि सुनाथ का कहा मानो। सुनाथ अगर मेरी बातें नहीं मानेगा तो इसका मतलब हुआ कि उसने मेरा अनादर किया। सुनाथ की बातें नहीं मानकर तुमने मेरा अनादर किया। अब तुम्हीं बताओ, बड़ों का आदर मंगल ने किया या तुमने?"

मदन हक्काबक्का रह गया। उसने कहा, "असल में सुनाथ ने आपका अनादर किया, इसीलिए यह समस्या उठ खड़ी हुई।" "इसमें सुनाथ की कोई ग़लती नहीं है। तुम दोनों की परीक्षा लेने के लिए मैंने ही उससे ऐसा करने कहा था। अगर मेरे शिष्य के व्यवहार में जो अंतरार्थ छिपा हुआ है, उसे तुम समझ नहीं पाये तो स्पष्ट है कि मेरे प्रति तुममें आदर की भावना नहीं है। मैंने ठीक कहा न?" सुमेध ने मदन से पूछा।

तब जाकर मदन ने अनुभव किया कि उसके पिता ने जायदाद को बाँटने में जो नीति अपनायी उसके अंतरार्थ को वह पहले समझ नहीं पाया। उसने तुरंत सुमेध के चरणों में गिरकर क्षमा माँगी। फिर दोनों भाई जनकपुरी लौट गये। मदन ने पिता से अपनी गलती स्वीकार कर ली।

तब श्रीधाम ने मदन से कहा, "मैं चाहता था कि तुम जानो कि पिता के निर्णय के विरुद्ध बोलना सही नहीं है। पर, जायदाद को उस तरह बाँटना भी मेरे लिए ठीक नहीं है।" वह कहते हुए उसने जायदाद को दोनों में समान रूप से बाँटा और शेष जीवन देव भक्ति में बिताया।

नरक जो दिखाये

कामेश की हमेशा यही इच्छा रहती थी कि कैसे भी हो, रामेश से अधिक अक्लमंद कहलाऊँ, और लोगों के सामने उसे नीचा दिखाऊँ। इसलिए पास ही के गाँव में जाकर उसने चित्रकला सीखी और अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने के मौक़े की प्रतीक्षा करने लगा।
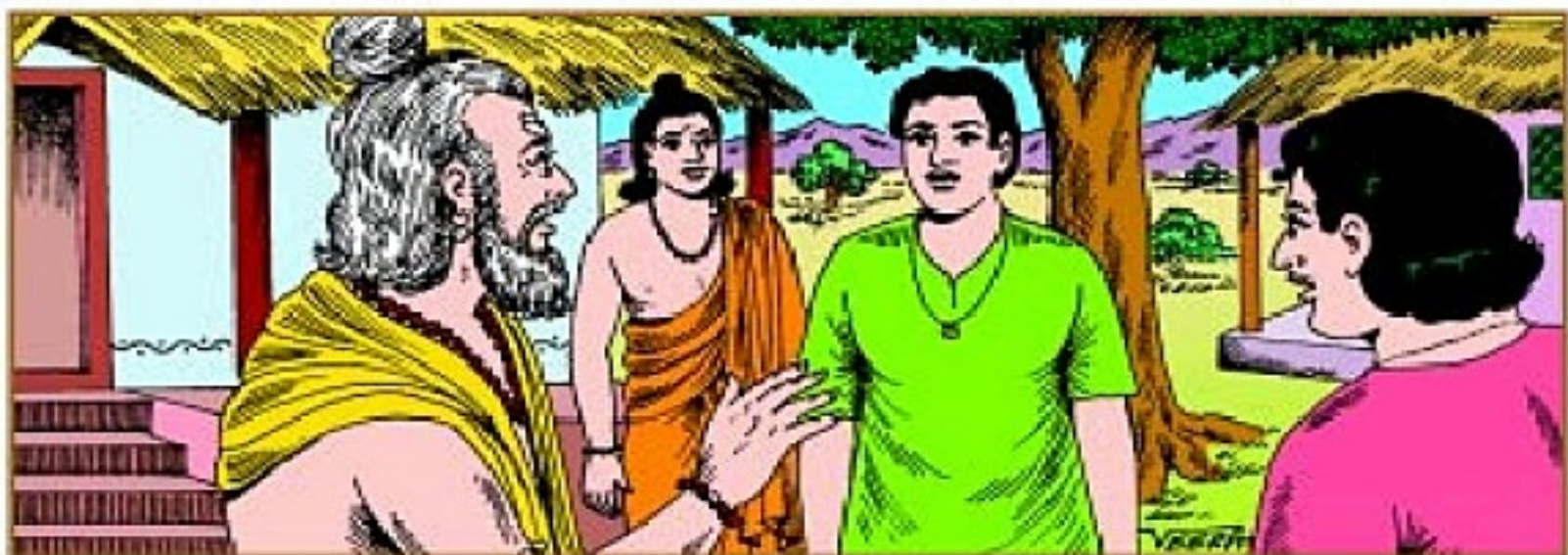
उस साल गाँव में चोरियाँ बहुत बढ़ गयीं। जो चोर पकड़े गये उनके हाथों में हथकड़ियाँ लगायी गईं, जेल में ठूंसकर उन्हें तरह-तरह से सताया गया, पर चोरों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

ग्रामाधिकारी ने गाँव के प्रमुख लोगों से इसके बारे में बातें कीं। उन्होंने कहा, ''गाँव में सती सावित्री की कथा का आयोजन करेंगे? जिसे क़ैदी चोर भी सुनेंगे। उस कथा में सावित्री सत्यवान के प्राण ले जानेवाले यमराज का पीछा करती है, उस महा पतिव्रता को यमराज ने डरा कर लौट जाने का आदेश दिया। यह भी बताया कि नरकलोक कितना भयंकर होता है। अतः च ोर नरक की यातनाओं के भय से शायद चोरियाँ न करें, उनसे दूर रहें।''

कामेश ने तुरंत कहा, ''नरकलोक का चित्र दिखायेंगे तो उनमें डर और बढ़ जायेगा। इसलिए घोषणा करेंगे कि जो नरकलोक का चित्र प्रदर्शित करेंगे, उन्हें पुरस्कार दिया जायेगा।''

''उपाय तो सही लगता है, परंतु पुरस्कार का मैं विरोध करता हूँ,'' रामेश ने कहा।

''यह विरोध अच्छा संस्कार नहीं कहलाता,'' कामेश ने कड़े स्वर में कहा।

रामेश इसपर हँस पड़ा और बोला, ''जो ज़िन्दा हैं, उन्हें नरकलोक का चित्र दिखाना और उस कलाकार को पुरस्कार देना, संस्कार नहीं कहलाता। यह निर्णय गाँव के प्रमुखों पर छोड़ता हूँ।''

सब हँस पड़े। कामेश, रामेश के हाथों एक बार और हार गया। - *सुचित्रा*

भयंकर घाटी

15

(ब्राह्मदण्डी ने जो उस पर जंगल में बीती थी, उसके बारे में राजगुरु के पास खबर भिजवाई। सेनापति ने केशव आदि को ढूँढ़ने के लिए जंगल में सैनिक भेजे। जंगलियों के सरदार ने केशव और उसके साथियों को राज्य की सीमाओं से बाहर ले जाने के लिए दो जंगली युवकों को नियुक्त किया। बाद में)

जंगली युवकों के साथ जंगल में कुछ दूर जाने के बाद केशव आदि, जान गये कि ब्रह्मापुर राज्य की सीमाओं से बाहर भाग जाना उतना आसान नहीं है जितना वे समझ रहे थे।

ब्रह्मापुर के सेनापति द्वारा भेजे गये सैनिक जंगली रास्तों में इधर उधर गश्त कर रहे थे। यही नहीं, आधे राज्य के लालच में कुछ जंगली भी पेड़ पौधों के पीछे केशव को ढूँढ रहे थे। इतने सारे लोगों की आँखों में धूल झोंककर कैसे भागा जाये? तीनों इसी समस्या के कारण अत्यन्त चिन्तित थे। 'लगता है, ब्राह्मदण्डी और उसके अंगरक्षकों से घोड़ों को झपटने से यह बवाल खड़ा हो गया। ब्राह्मदण्डी ने सेनापति और राजा को अपनी दुर्गति की खबर जरूर भिजवाई होगी। इससे सेनापति ने जंगलों में हमलोगों को पकड़ने के लिए सैनिकों की गश्त बढ़ा दी होगी और चप्पे-चप्पे पर उन्हें तैनात कर दिया होगा। यदि हम उनसे घोड़े न छीनते तो थोड़े से तैनात सैनिकों

से हम बचकर निकल सकते थे।' जयमल्ल ने मन ही मन सोचा।

"क्या तुम कोई ऐसा गुप्त मार्ग जानते हो, जो कोई सैनिक नहीं जानता हो, जिससे हम राज्य से बाहर निकल जायें?" केशव के बूढ़े बाप ने जंगली युवकों से धीमे से पूछा।

"हम इस जंगल में कई गुप्त मार्ग जानते हैं। उनमें से कोई एक भी किसी सैनिक को नहीं मालूम है, ऐसा हमारा विश्वास है। हमें डर उनसे नहीं है। खतरा तो हमें उनसे है, जो आधे राज्य के लालच में हमें जगह जगह खोज रहे हैं। वे भी सब गुप्त मार्ग जानते हैं।"

इतने में उन्हें सामने पत्थरों पर कुछ सैनिक दिखाई दिये। उनके साथ दो जंगली भी थे।

"सब पेड़ों के पीछे चलो। हमारी ओर ही आ रहे हैं।" कहकर जंगली झट पीछे की ओर के पेड़ों के पीछे भाग गये। केशव, जयमल्ल और बूढ़ा भी उनके पीछे भागे।

सब पेड़ों के पीछे छुपकर सैनिकों की ओर देखने लगे। जयमल्ल ने लम्बी साँस छोड़ते हुए कहा, "हमने जंगली वेश बदल रखे हैं। उस हालत में हम क्यों सैनिकों से छुपें। निर्भय होकर, हम उनके देखते-देखते राज्य की सीमाओं को पार कर सकते हैं।"

"सैनिकों को तो आप जंगली युवक लग सकते हैं, पर उनके साथ के जंगली युवक जान जायेंगे कि आप लोग सचमुच कौन हैं।" जंगली युवक ने उसका हाथ पकड़कर कहा।

जयमल्ल अभी उससे कुछ पूछने ही वाला था कि पीछे से उसे कोई शोर सुनाई दिया। तुरंत सब ने उस ओर मुड़कर देखा। कुछ दूरी पर, उन्हें कुछ सैनिक उनकी ओर आते हुए दिखाई दिये।

"उन्होंने अभी हमें नहीं देखा है। और हम किसी भी तरफ़ नहीं भाग सकते।" कहकर केशव ने झट दो चार बाण हाथ में ले लिये।

जंगली युवक ने उसे रोकते हुए कहा, "इतने सारे लोगों से हम युद्ध नहीं कर सकते। बाण वापस रख लो। हम पहले किसी को नहीं छेड़ेंगे। नहीं तो 'आ बैल, मुझे मार' वाली कहावत चरितार्थ हो जायेगी। जब कोई और रास्ता नहीं बचेगा तब आत्म रक्षा के लिए ही हमें युद्ध का मार्ग अपनाना चाहिये, चाहे परिणाम जो हो। हम आपकी रक्षा की यथा संभव कोशिश अवश्य करेंगे। वह देखो,

जो गुफा दिखाई दे रही है, अभी उसमें छुप जायें।'' वे पहाड़ की ओर गये।

सब पेड़ों के पीछे लुकते छुपते आगे बढ़े। सामने पहाड़ की तराई पर उनको बहुत-सी गुफाएं दिखायी दीं। ''यदि उन सैनिकों ने गुफाएं भी देखनी शुरू कीं, तो हम इस तरह पकड़े जायेंगे जैसे जानवर पिंजड़ों में पकड़े जाते हैं,'' बूढ़े ने यह बात जंगली युवकों से कही।

वे भी यही सोच रहे थे। पेड़ों के पीछे छुपा नहीं जा सकता था। सैनिक उनको चारों तरफ़ से घेर रहे थे। शायद वे गुफाओं में खोजते आ रहे थे। गनीमत थी कि वे अभी तक नहीं पकड़े गये थे। 'आश्चर्य है ! जंगल के चप्पे-चप्पे पर सैनिक हमारा पीछा कर रहे हैं। लगता है, सारे जंगल में फैले हुए हैं।' केशव के पिता ने सोचा।

यकायक आगे-आगे चलता, जंगली युवक रुका। सामने के पत्थर के पीछे एक लोमड़ी कुछ दूर उछली। उसके दो बच्चे भागे। जंगली युवक ने बाण निकालकर लोमड़ी पर छोड़ा। उसने पीछे मुड़कर भी न देखा। सामने की ओर भागी। और अपने दोनों बच्चों के साथ कहीं चली गई।

''सौभाग्यवश हमें लोमड़ी दिखाई दी। वह जिस गुफा में गई है, देखी है न? हम भी उसी में चलें।'' जंगली युवक ने कहा।

''सैनिक उस गुफा को देखने के लिए आ रहे हैं।'' जयमल्ल ने कहा।

''आ रहे हैं तो क्या? हम उस गुफा में तो रहेंगे नहीं? जो लोमड़ी शत्रुओं को देखकर भाग रही हो, वह कभी ऐसी गुफा में न जायेगी, जिसमें से वह भाग न सके। फिर यह लोमड़ी तो बच्चोंवाली है। हमारे लिए भी वही गुफा सुरक्षित रहेगी जिसमें लोमड़ी गई है। उस गुफा से हम बाहर निकलकर कहीं और स्थान पर जा सकते हैं। अभी इसके अलावा दूसरा निराप द मार्ग नहीं है।'' जंगली युवक ने कहा।

केशव और उसके बूढ़े पिता के आश्चर्य की सीमा न थी। वे जंगली युवकों के पीछे गुफा में घुसे। गुफा में अन्धेरा ही अन्धेरा था। कहीं कोई रोशनी न थी। उन तीनों ने सोचा कि जंगली युवक का अनुमान गलत निकला और अब हम इसी गुफा में पकड़े जायेंगे।

''गुफा से बाहर निकलने का तो कोई मार्ग नहीं मालूम होता।'' जयमल्ल ने हताश होकर कहा।

दोनों जंगली युवक आपस में कुछ बातें करने लगे। केशव ने गुफा से फिर बाहर निकलकर इधर-उधर देखा। सैनिक और उनको रास्ता दिखाने-वाले जंगली युवक उनकी ओर आ रहे थे।

केशव पीछे मुड़कर कुछ कहने ही वाला था कि जंगली युवक के हाथ में मशाल जली। उसने जयमल्ल की ओर मुड़कर कहा, ''क्या तुम सोच रहे हो कि लोमड़ी अभी इसी गुफा में है?''

उसने हँसकर कहा, ''हमें उसी रास्ते पर जाना होगा, जिस रास्ते वह गई है। वे आगे बढ़े। वे सब मिलकर बीस कदम गये थे कि यकायक हवा का झोंका आया और मशाल बुझ गई।''

''देखा, अब जान गये कि गुफा से बाहर निकलने का रास्ता कहाँ है।'' कहता अभी जंगली युवक दो कदम आगे बढ़ा था कि उस पर रोशनी पड़ी। उसने दूसरों को इशारा किया, वहाँ पत्थरों पर रेंगता रेंगता, एक छलाँग में ऊपर चलागया। बाकी चार भी उसके पीछे पीछे, गुफा से बाहर निकल आये।

उन्होंने पहाड़ पर चढ़कर देखा, तो वह प्रदेश निर्जन-सा जान पड़ा। दूर नीचे नदी बह रही थी। उसके पास में एक पहाड़ था और उस पर बहती नदी एक झरना बनाती थी।

''उस प्रपात के पास एक सुरंग है। वह सुरंग पानी में से होती कुछ दूर जाती है, फिर नदी के एक और नाले को जाती है, उसको पार करने से कपिल राज्य आता है।'' जंगली युवक ने कहा।

इतने में दूसरे जंगली युवक ने ज़रा ज़ोर से कहा, ''वह देखो, देखो नदी के किनारे, पत्थरों के पीछे सैनिकों के डेरे दिखाई देते हैं।''

सब ने उस ओर देखा। नदी के किनारे दस-बारह डेरे थे। उनके सामने भाला पकड़े एक सैनिक पहरा दे रहा था।

''सब सैनिक, लगता है, हमें ढूँढ़ने के लिए पहाड़ों पर घूम फिर रहे हैं। वह अकेला ही वहाँ पहरा दे रहा है। यदि हमने उसे मार दिया तो हम नदी बिना किसी बिघ्न के पार कर सकते हैं।'' केशव ने कहा।

सब ने इसकी स्वीकृति में सिर हिलाये। केशव ने अपनी तलवार निकाली और बिल्ली की तरह चुपचाप उस सैनिक की ओर चला। सैनिक किसी और तरफ़ देख रहा था।

केशव के पीछे सब चले। एक बाण से सैनिक

को मारा जा सकता था। यदि वह मरने से पहले चिल्लाया तो उसके बारे में सब को मालूम हो जायेगा। उसका चुपचाप काम तमाम करना होगा।

सब यों सोचते-सोचते, धीमे धीमे चुपचाप पत्थरों के पीछे से आगे जा रहे थे। इतने में केशव, सैनिक के पीछेवाले पत्थर पर पहुँचा, उसके पीछे से वह उछला। सैनिक के गले पर तलवार फेंकी। सैनिक बिना चूं चा किये ही तने की तरह गिर गया।

केशव खड़ा हुआ । वहाँ से करीब सौ गज़ की दूरी पर नदी का किनारा था। किनारे पर दो तीन किश्तियाँ थीं । केशव के इशारा करते ही सब नदी के किनारे भागे-भागे आये।

"सब मिलकर एक किश्ती में जाना अच्छा है। नदी में कहीं-कहीं भंवरे हैं। खाली किश्तीको आगे धकेलते हुए हम पीछे पीछे चलेंगे और इतनी सावधानी करने पर भी कोई खतरा आया, तो हमें नदी तैरकर पार करनी होगी।" जंगली युवक ने कहा।

वे सब एक किश्ती में जा बैठे। एक और किश्ती को सामने बाँस से धकेलने लगे। जल प्रपात की ओर निकले।

यह सच था कि नदी में भंवरें थीं। ऐसी जगह जहाँ किश्ती के फँसने की सम्भावना थी वे किश्ती को अलग धकेल देते और किश्ती को उसमें न फँसने देते। थोरी देर में वे झरने के पास गये। एक छलाँग में उसके पीछे की सुरंग में जा पहुँचे।

सुरंग में नदी का जल बड़ी तेज़ी से बह रहा था। जल प्रपात में जाते जाते सब भीग गये।

"इस सुरंग के किनारे से टकराकर किश्ती के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।" बूढ़े ने कहा।

इतने में सामने की किश्ती सुरंग के किनारे से जा टकराई और टुकड़े-टुकड़े हो गई, और वह किश्ती भी जिसमें केशव आदि बैठे हुए थे उससे जा टकराई और उलट गई।

जो किश्ती में थे, वे नदी में गिर गये। "ज्येष्ठा, कनिष्ठा तुम कैसे हो? क्या हमारे जंगली साथी ठीक हैं?" केशव का पिता ज़ोर से चिल्लाया। इसके जवाब में चारों एक साथ चिल्लाये।

"क्या बाबा, तुम तैर सकोगे? या हम मदद करें?" केशव अपने पिता की ओर आने लगा।

"कनिष्ठा, यहाँ बाबा कौन है?" बूढ़ा चिल्लाया, "शिष्यो, गड़ेजन्ना के साथियो, सुरंग की शिलाओं से बचकर जाओ, यह मौनानन्द बड़ा अच्छा तैराक है। तुम सब अपना-अपना ख्याल रखो। जंगली साथियों का ध्यान रखना। मेरे लिए कोई डर की बात नहीं है।" उसने कहा।

चार पाँच मिनट वे सुरंग में ज़ोर से तैरते रहे। उनको यकायक पानी ने आगे धकेल दिया।

"लगता है, इस तरफ़ एक और प्रपात है। हम बहुत ऊँचाई से नीचे की नदी में गिरने जा रहे हैं। केशव, बच कर रहो। जंगली दोस्तो, सावधान, साव..." जयमल्ल चिल्लाया।

सुरंग में से बहनेवाला पानी तीस चालीस फुट नीचे की नदी में गिर रहा था। केशव और उसके साथी प्रपात से नदी में जा गिरे।

एक क्षण सब ने सोचा जैसे उनकी जान ही चली गई हो।

फिर सम्भलकर उन्होंने एक दूसरे को नाम से बुलाया। भाग्य से वे सब किसी चट्टान से न टकरा कर गहरे जल में गिरे।

यह जानकर कि सब सुरक्षित हैं, वे नदी को पार करने के लिए जल्दी-जल्दी तैरने लगे।

जैसे-तैसे थके माँदे वे पाँचों किनारे पर पहुँच ही रहे थे कि उन्हें वहाँ छुरी तलवार लिये, कुछ जंगली लोग घूमते हुए दिखाई दिये।

(अभी है)
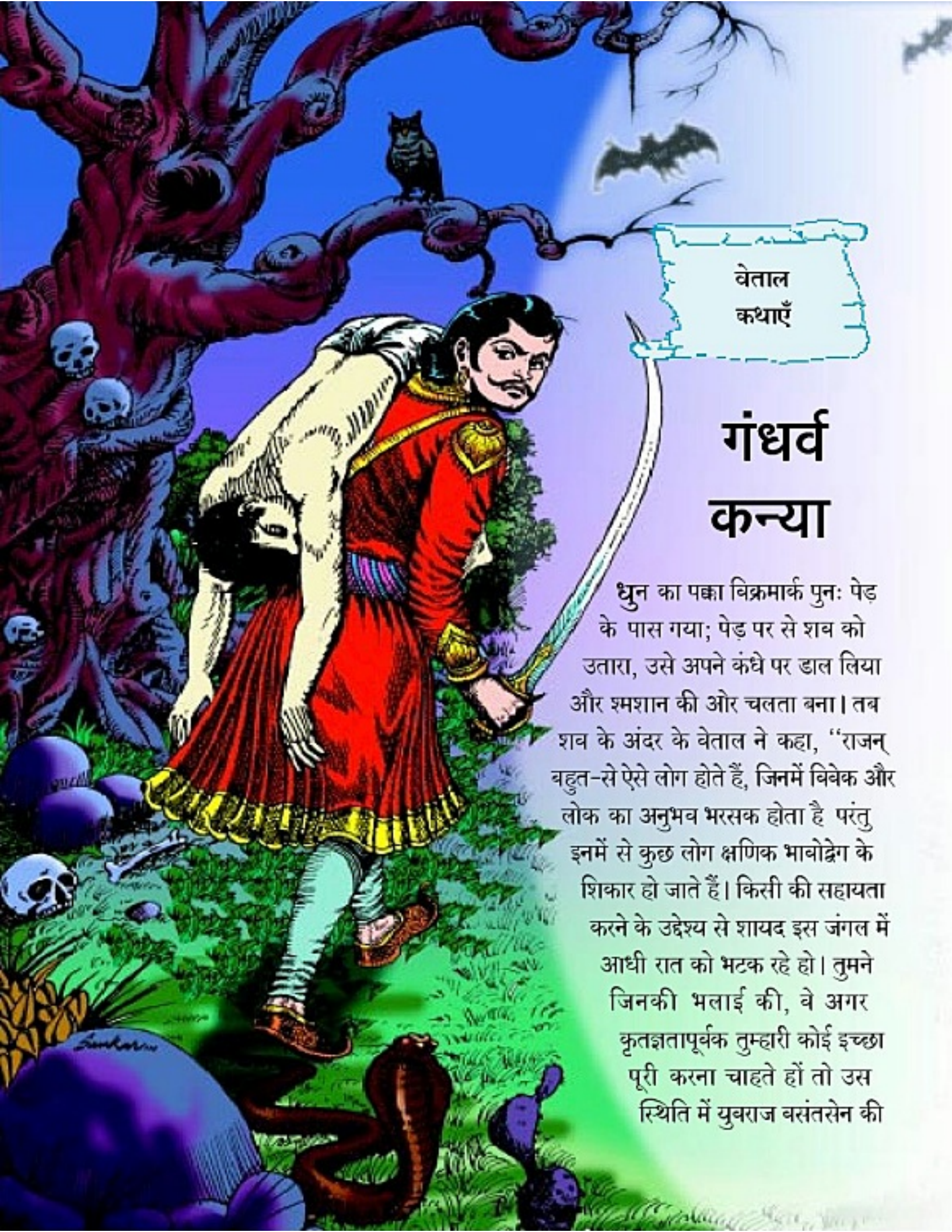
वेताल कथाएँ

गंधर्व कन्या

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया; पेड़ पर से शव को उतारा, उसे अपने कंधे पर डाल लिया और श्मशान की ओर चलता बना। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन् बहुत-से ऐसे लोग होते हैं, जिनमें विवेक और लोक का अनुभव भरसक होता है परंतु इनमें से कुछ लोग क्षणिक भावोद्वेग के शिकार हो जाते हैं। किसी की सहायता करने के उद्देश्य से शायद इस जंगल में आधी रात को भटक रहे हो। तुमने जिनकी भलाई की, वे अगर कृतज्ञतापूर्वक तुम्हारी कोई इच्छा पूरी करना चाहते हों तो उस स्थिति में युवराज बसंतसेन की

तरह व्यवहार मत करना। आगे और सावधान रह सको, इसके लिए मैं तुम्हें उसकी कहानी बताऊँगा। थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी सुनना।'' फिर बेताल बसंतसेन की कहानी यों सुनाने लगाः

गंधर्व लोक में चित्रवर्णिका नामक एक गंधर्व कन्या थी। वह अद्‌भुत सौंदर्य - राशि थी। सब लोग उसकी सुंदरता की प्रशंसा किया करते थे।

स्वर्णमंजरी, गंधर्व राजा शक्तिते ज की इकलौती बेटी थी। चित्रवर्णिका की सुंदरता के बारे में सुनते-सुनते उसके कान पक गये। उसमें उसके प्रति द्वेष की भावना उत्पन्न हो गई।

बेटी की इच्छा पर शक्तितेज, स्वर्णमंजरी को एक बार भूलोक ले गया। वहाँ की विचित्रताएँ, विशेषताएँ और दर्शनीय स्थल उसने उसे दिखाये। लौटने के बाद स्वर्णमंजरी सबको भूलोक के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर कहती रहती। इसलिए चित्रवर्णिका में भी भूलोक को देखने की इच्छा जगी।

शक्तितेज ने जब यह ख़बर पुत्री के द्वारा सुनी, तो उसने चित्रवर्णिका को सभा में बुलवाया और कहा, ''चित्रा, मेरी अनुमति के बिना भूलोक जाना अपराध है। अगर तुमने फिर भी भूलोक जाने का निश्चय किया तो फ़ौरन गंधर्व कन्या की समस्त शक्तियाँ खो दोगी। परंतु हाँ, भूलोक के किसी महत्तर दर्शनीय स्थल को पंद्रह दिनों के अंदर देख पाओगी तो वे शक्तियाँ तुम्हें पुनः प्राप्त हो सकती हैं। तभी तुम फिर से गंधर्व लोक में क़दम रख सकती हो।''

गंधर्व राजा की बातें सुनकर उसमें आग्रह और बढ़ गया, उसके शाप के लिए भी वह सन्नद्ध हो गयी और तुरंत भूलोक निकल पड़ी। गगन मार्ग से यात्रा करते समय उसने भूलोक के अरण्य प्रांत में प्रवाहित होते हुए एक सुंदर प्रपात को देखा। चित्रवर्णिका ने उस प्रपात के तले जी भर के नहाया और जब गगन मार्ग की ओर उड़ी तो उसे मालूम हो गया कि उसने समस्त शक्तियाँ खो दीं। उससे उड़ा नहीं जा रहा था। उसके मन की कोई इच्छा पूरी नहीं हो रही थी।

उस समय एक घुड़सवार युवक उधर से गुज़र रहा था। चित्रवर्णिका को देखकर उसने कहा, ''सुंदरी, तुम्हारे इन अद्‌भुत रूप लावण्यों को देखते हुए लगता है कि तुम भूलोक की कांता

नहीं हो। मुझे देखने के बाद तुम अदृश्य नहीं हुई। इसका यह मतलब हुआ कि तुम किसी संकट में हो। मैंने ठीक ही कहा न?''

''ऐ भूलोकवासी, तुम बहुत ही सूक्ष्मग्राही हो। मेरा नाम चित्रवर्णिका है, गंधर्व कन्या हूँ। तुम्हारा लोक देखने आयी, फलस्वरूप अपनी शक्तियाँ खो बैठी।'' चित्रवर्णिका ने कहा।

उस युवक ने अपना परिचय देते हुए कहा, ''मेरा नाम वसंतसेन है। कीर्तिचंद्रिका राज्य का युवराजा हूँ। राज्याभिषेक के पूर्व देश में घूमने निकला हूँ। मैं तुम्हें भूलोक के मुख्य और महत्वपूर्ण स्थल दिखाऊँगा। इसके बदले में तुम्हें मुझे गंधर्व लोक दिखाना होगा। मैं वहाँ के शासन की श्रेष्ठ पद्धतियों को अपने राज्य में अमल में लाना चाहता हूँ।''

''युवराज, तुम्हारे विचार प्रशंसनीय हैं। परंतु, गंधर्व लोक पहुँचने के लिए मुझे आवश्यक शक्तियाँ पानी होंगी।'' फिर उसने गंधर्व लोक से निकलने के पहले, जो हुआ, वह सारा वृत्तांत वसंतसेन को सुनाया।

फिर कहा, ''शक्तितेज हमारे राजा हैं। पुनः मैं गंधर्व शक्तियाँ प्राप्त कर सकूं, इसके लिए उन्होंने एक मार्ग सुझाया। पंद्रह दिनों के अंदर यदि मैं भूलोक के सबसे महत्तम पुण्यस्थल के दर्शन करूँ तो इस शाप से मुक्त हो सकूँगी। क्या तुम बता सकते हो कि वह महत्तम पुण्यस्थल कहाँ है और कौन-सा है?''

इसपर वसंतसेन ने कहा, ''हमारे देश के

पंडित जानते हैं कि वह पुण्यस्थल कौन-सा है। इस पवित्र स्थल पर महाशिव और पार्वतीदेवी विहार करते हैं और इस का नाम है, कैलासगिरि। मानसरोवर उसके निकट ही है। वहाँ से हम कैलास गिरि के दर्शन कर सकते हैं।''

यह सुनते ही चित्रवर्णिका ने बड़े ही उत्साह के साथ कहा, ''परंतु, क्या पंद्रह दिनों के अंदर हम वहाँ पहुँच सकेंगे?''

''हाँ, पंद्रह दिनों के अंदर हमारा वहाँ जाना संभव है। मार्ग मध्य में भूलोक की विशेषताएँ दिखाता जाऊँगा।'' फिर दोनों निकल पड़े। वसंतसेन चित्रवर्णिका को मार्ग मध्य में स्थित सुंदर मंदिरों, तथा अन्य रमणीय प्राकृतिक दृश्यों को दिखाता गया। दस दिनों के अंदर वसंतसेन, चित्रवर्णिका सहित मानसरोवर पहुँचा।

पूर्णिमा की रात थी। चांदनी में कैलासगिरि चमक रहा था। कैलासगिरि को देखते ही दोनों ने सिर झुकाकर भक्तिपूर्वक प्रणाम किया।

दूसरे ही क्षण चित्रवर्णिका का शरीर दिव्य-कांति से जगमगा उठा। वह समझ गयी कि उसे पुनः गंधर्व शक्तियाँ प्राप्त हो गयीं। उसने वसंतसेन से खुश होती हुई कहा, ''युवराज I, तुम्हारी सहायता कभी नहीं भूलूँगी।''

जैसे ही पुत्री स्वर्णमंजरी के द्वारा गंधर्व राजा ने चित्रवर्णिका और वसंतसेन के बारे में जानकारी प्राप्त की, वहाँ वह अक स्मात् आ धमका। स्वर्णमंजरी अदृश्य रूप में पहले से ही चित्रवर्णिका का पीछा कर रही थी।

चित्रवर्णिका ने, बड़े ही विनय से शक्तितेज से कहा, ''ये कीर्तिचंद्रिका राज्य के युवराज वसंतसेन हैं। इनसे मुझे बहुत सहायता प्राप्त हुई है। मैंने इन्हें गंधर्व लोक दिखाने का वचन दिया। हम इन्हें अपना अतिथि बनाकर ले जायेंगे।'' इसपर शक्तितेज ने क्रोधित हुए कहा, ''मानवों के लिए हमारा लोक निषिद्ध है। क्या यह सत्य भूल गयी?'' कहकर वह गायब हो गया।

''हमारे गंधर्व राजा की बातें तुमने सुन लीं । हो सकता है, तुम्हें गंधर्व लोक ले जाने से मैं कष्टों में फंस जाऊँ। फिर भी तुम चाहो तो मैं तुम्हें गंधर्व लोक ले जाऊँगी।'' चित्रवर्णिका ने कहा।

वसंतसेन ने हिचकिचाये बिना कहा, ''जब तुमने यह कह दिया तो भला मैं तुम्हारा लोक देखना क्यों चाहूँगा।

''अपना मन बदलकर साक्षात् तुम्हारे गंधर्व राजा ही आ जाएँ और गंधर्व लोक आने का

निमंत्रण दें, तो भी मैं तुम्हारे लोक में क़दम नहीं रखूँगा।'' चित्रवर्णिका, वसंतसेन की इस बात पर बेहद खुश होती हुई ग़ायब हो गयी।

वेताल ने कहानी सुनायी और कहा, ''राजन्, युवराज वसंतसेन ने कष्ट सहकर चित्रवर्णिका की सहायता की। उसी की वजह से उसे गंधर्व शक्ति प्राप्त हुई। अलावा इसके, उसमें यह प्रबल इच्छा थी कि गंधर्व लोक जाऊँ और वहाँ की शासन-पद्धतियों से परिचय प्राप्त करूँ और उनमें जो अच्छाइयाँ हैं, उन्हें अपने राज्य में अमल में लाऊँ। जब चित्रवर्णिका उसे गंधर्व लोक ले जाने का हठ कर रही थी तो वसंतसेन ने गंधर्व लोक जाने से क्यों इनकार किया? क्या वह किन्हीं तात्कालिक भावोद्वेगों का शिकार हुआ? अथवा उसे गंधर्व राजा से भय था? मेरे इन संदेहों के उत्तर जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जाएँगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''वसंतसेन का मानना था कि गंधर्व उत्तम होते हैं, इसलिए गंधर्व लोक की अच्छी शासन-पद्धतियों को भूलोक में अमल में लाने की उसकी इच्छा थी। परंतु वह जान गया कि स्वर्णमंजरी ईर्ष्या सेजली जा रही है और गंधर्व राजा अकारण ही क्रोधित हो रहे हैं। उसने चित्रवर्णिका से शाप आदि के बारे में भी सुन रखा था। वह जान गया कि गंधर्व लोक में ऐसी कोई अच्छाई नहीं है, जो भू लोक में अमल में लायी जा सकती हो। इसी कारण उसने वहाँ न जाने का निर्णय लिया।

यही नहीं, जब चित्रवर्णिका ने यह कहा कि तुम्हें गंधर्व लोक ले जाने में मुझे अनेक कष्ट सहने होंगे, फिर भी इनकी परवाह किये बिना मेरे साथ चलना ही चाहते हो तो मुझे लाचार होकर ले जाना पड़ेगा, तो इससे बसंतसेन को आश्चर्य भी हुआ और साथ ही घृणा भी। इन्हीं कारणों से उसे अपना निर्णय बदलना पड़ा। किन्हीं तात्कालिक भावोद्वेगों में आकर उसने यह निर्णय नहीं लिया।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(तुलसी की रचना के आधार पर)

हमारे राष्ट्रगीत की 'शताब्दी'

बंकिमचन्द्र चटर्जी

सन् १८७५ का वर्ष। बंकिमचन्द्र चटर्जी रेल द्वारा कलकत्ते से अपने गाँव कन्तलपाड़ा जा रहे थे। खिड़की से जब उन्होंने बाहर झांका तो बाहर का प्राकृतिक दृश्य देखकर वे मुग्ध हो गये। प्रकृति माता की विशेषताओं पर कविता लिखने की तभी उन्हें प्रेरणा हुई। उन्होंने शीर्षक दिया, 'वन्दे मातरम', जिसका अर्थ होता है, ''हे माते, मैं तुम्हें नमन करता हूँ।'' सन् १८८२ में उन्होंने एक उपन्यास लिखा, 'आनन्द मठ'। कहानी संन्यासियों के एक समूह के बारे में है जो ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने के लिए गुप्त रूप से मिलते हैं। एक दृश्य में लेखक देशभक्तों द्वारा 'वन्दे मातरम्' कविता को गाते हुए दिखाता है। उपन्यास तथा कविता को अचानक लोकप्रियता मिल जाती है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सितम्बर १९०६ में आयोजित बनारस वार्षिक सम्मेलन में कवि रबीन्द्रनाथ टैगोर ने कविता को संगीतबद्ध किया था और इसे स्वयं गाया था। तब यह निश्चय किया गया था कि हरेक कांग्रेस सम्मेलन या बैठक की कार्यवाही 'वन्दे मातरम' के आवाहन से आरम्भ की जायेगी। संविधान सभा ने टैगोर की कविता ''जन-गण-मन'' को राष्ट्रगान के रूप में ग्रहण किया, जब कि ''बन्दे मातरम'' को उसी के समान महत्व देते हुए राष्ट्रगीत के रूप में चुना गया। सितम्बर में, भारत ने सन् १९०६ में कांग्रेस सम्मेलन द्वारा इसे ग्रहण करने की स्मृति में बन्दे मातरम की शताब्दी मनाई।

गज राजा

अरुणा नदी के तट पर कृष्ण चैतन्य का गुरुकुल था। शिक्षा की समाप्ति के बाद जब पाँच विद्यार्थी स्वस्थल लौटनेवाले थे, तब उन्हें संबोधित करते हुए कृष्ण चैतन्य ने कहा, ''जब आप लोगों ने गुरुकुल में प्रवेश किया था, तब बिलकुल ही अशिक्षित थे। अब अमरकोश सहित कितने ही ग्रंथों का अध्ययन तुम पाँचों ने बड़ी ही खूबी के साथ किया। यह कैसे संभव हो पाया? यह संभव हो पाया, निरंतर अभ्यास और विकसित बुद्धि बल के कारण। अब तुम लोग बाह्य विश्व में क़दम रखने जा रहे हो। जीवन पुष्पों से बिछी पगडंडी नहीं है। यह मत भूलना कि यह एक अविराम संघर्ष है। मनुष्य के लिए आवश्यक है, आत्म-विश्वास और निरंतर प्रयत्न। इनके होने पर ही भविष्य उज्ज्वल बन सकता है। गजराज में अपार बल होता है, पर बह अगर यह समझ नहीं पाये तो उसे कोई लाभ नहीं पहुँचेगा। उदाहरणस्वरूप मैं एक कहानी सुनाऊँगा। ध्यानपूर्वक सुनो।'' फिर वे कहानी यों सुनाने लगे:

वीरेश, जंतुओं और पक्षियों से अनेक करतबें करवाता था और उस आमदनी से अपना पेट भरता था। एक दिन जब बह जंगल से गुज़र रहा था, तब उसने एक हाथी के बच्चे को गड्ढे में गिरा हुआ देखा। उसने उसे ऊपर उठाया और अपने साथ शहर ले गया। उसने एक रस्सी से खंभे के साथ उसे बांध दिया और चारा खिलाने लगा।

हाथी के बच्चे को अपने माता-पिता की याद आयी। जंगल में चले जाने की उसकी इच्छा हुई। उसने रस्सी को तोड़ने की भरसक कोशिश की। पर, वह सफल हो नहीं पाया। वह कुछ दिनों तक इसी कोशिश में लगा रहा। पर, कोई फ़ायदा नहीं हुआ। बेचारा वह कोशिश करते-करते थक गया। उसने समझ लिया कि रस्सी को तोड़ना उसके बस की बात नहीं है, इसलिए उसने माता-

सागर 'वियोगी'
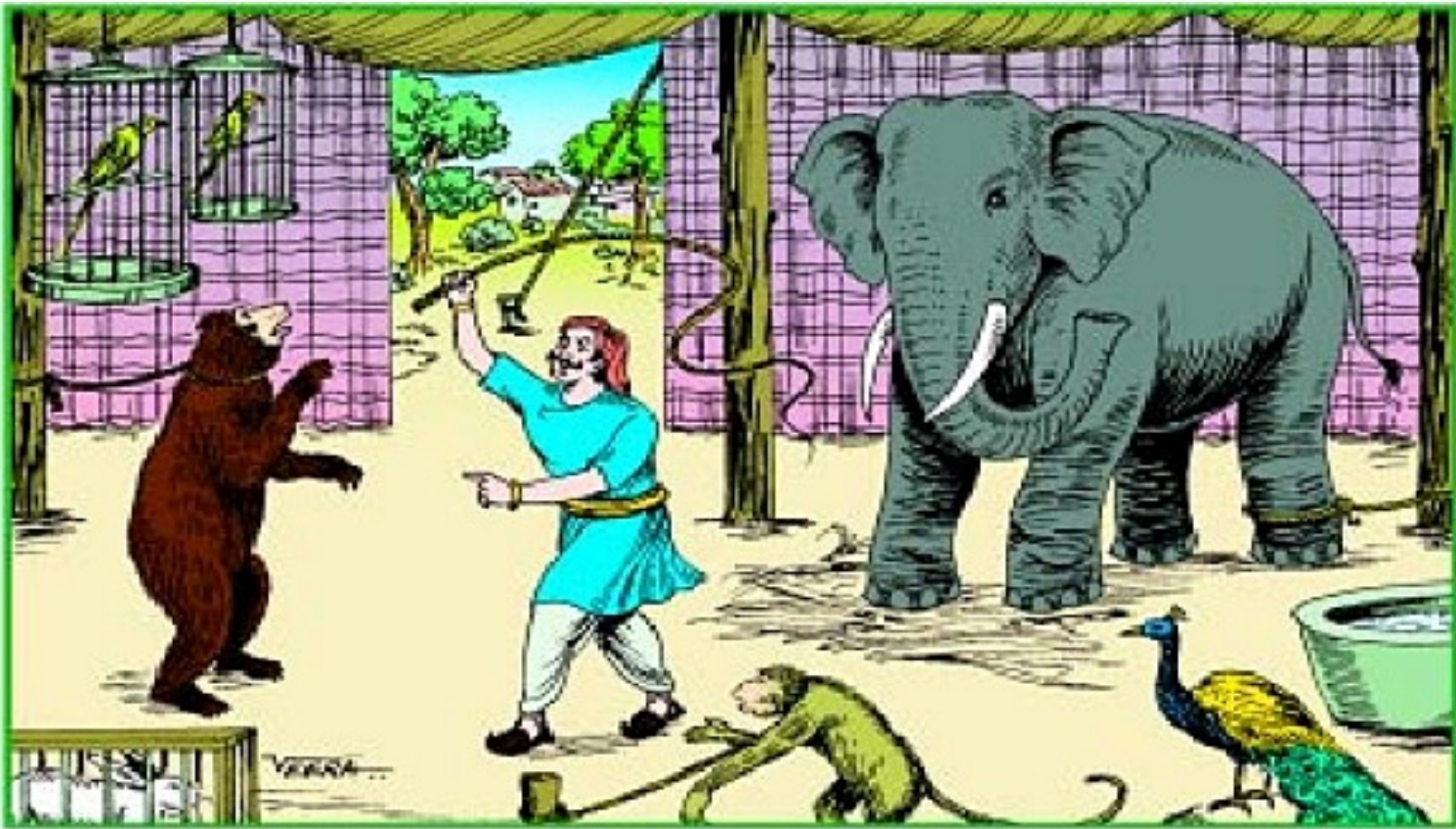
पिता को देखने की आशा छोड़ दी और वीरेश के कहे अनुसार चलने लगा। वीरेश उस हाथी के बच्चे से तरह-तरह के करतबों का प्रदर्शन कराने लगा। यों कुछ साल बीत गये। अब हाथी जवान हो गया। और बड़ा बलशाली दीखने लगा।

इस बीच, वीरेश जंगल से एक रीछ को पकड़ ले आया। मज़बूत रस्सी से उसने उसे एक खंभे से बांध दिया। उसने अपने को छुड़ाने की भरसक कोशिश की। परंतु, वह भी असफल हुआ। वीरेश ने उसे कितने ही करतब सिखलाये। जब कभी वह उसके कहे मुताबिक नहीं करता तब वह उसे चाबुक से मारता था। अगर वह उसका कहा मान लेता तो उसे खूब खिलाता भी था।

एक दिन वीरेश ने उस रीछ को चाबुक से खूब पीटा। वह रात भर दर्द के मारे कराहता रहा। उसकी दुस्थिति देखकर हाथी को दया आयी। उसने पूछा, ''दोस्त, क्यों बेकार मार खाते हो? मालिक जो कहता है, चुपचाप करते जाओ। तुम उसकी बात मान जाओगे तो भरपेट खाना भी मिलेगा। आराम से ज़िन्दगी काट सकोगे?''

''गजराज, तुम भी मालिक का समर्थन करने लगे? खाने को जो वह देता है, उससे मेरा पेट नहीं भरता। जंगल में आराम से रह रहा था, बड़े आनंद से घूम-फिर रहा था, वह मुझे बंदी बनाकर यहाँ जबरदस्ती ले आया। कमाने के लिए मुझे वह तरह-तरह से सता रहा है। जब तक मुझे उससे छुटकारा नहीं मिलता, तब तक मैं सुखी नहीं रह पाऊँगा।'' रीछ ने दीन और आक्रोश भरे स्वर में कहा।

''यह तुमसे नहीं हो पायेगा। मैंने भी कभी तुम्हारी ही तरह कोशिश की। पूरा बल लगाने के बाद भी मैं यह रस्सी तोड़ नहीं पाया।'' हाथी ने अपनी लाचारी व्यक्त करते हुए कहा।

उसकी बातों पर रीछ ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा। ''क्यों हँसते हो? मेरी कहानी तुम्हें क्या मज़ाक लगती है?'' हाथी ने नाराज़ होते हुए कहा।

''गजराज, तुम अपने बल से अपरिचित हो। तुम चाहो तो इस रस्सी को आसानी से तोड़ सकते हो, खंभे को उखाड़ सकते हो, खेमे को उड़ा सकते हो? ये सब तुम्हारे बल के सामने तिनके के बराबर हैं,'' रीछ ने कहा।

''मैं तुमसे बता चुका हूँ कि मेरे सारे प्रयत्न बेकार हो गए हैं।'' हाथी ने कहा।

''तुमने कोशिश कब की थी? जब तुम बच्चे थे। तब तुममें बल नहीं था। अब पहाड़ों को भी चूर्ण कर सकते हो। एक और बार कोशिश करके देखो तो सही, तो तुम्हें मालूम हो जायेगा कि तुम कितने बलशाली हो।'' रीछ ने उसे प्रोत्साहन देते हुए कहा।

रीछ की बातों से हाथी में उत्साह भर आया। उसने रस्सी तोड़ डाली। साथ ही रीछ की रस्सी भी तोड़ दी। दोनों जंगल की ओर भागे। जंगल में प्रवेश करने के बाद हाथी ने कहा, ''दोस्त, मैं बहुत ही नादान था। तुम नहीं बताते तो अपना बल जान नहीं पाता।''

''सिर्फ तुम्हारे लिए ही नहीं। बहुतों के लिए यह बात सच है। डर के मारे कोशिश ही नहीं करते। जो कोशिश नहीं करते, भला उन्हें विजय कैसे प्राप्त होगी?'' रीछ ने कहा।

इसके बाद दोनों अपने-अपने लोगों से मिले और स्वतंत्रतापूर्वक ज़िन्दगी काटने लगे।

कृष्ण चैतन्य ने कहानी सुनाने के बाद कहा, ''तुम लोगों को भी अपने शक्ति-सामर्थ्य को भुलाना नहीं चाहिये। निरंतर प्रयत्न करते रहना चाहिये। इससे तुम लोग सुखी जीवन बिता सकोगे और दूसरों को भी सुखी रख पाओगे,'' कहते हुए उन्होंने शिष्यों को आशीर्वाद दिया।

पाँचों ने भक्तिपूर्वक उन्हें प्रणाम किया और वे वहाँ से स्वस्थल के लिए निकल पड़े।
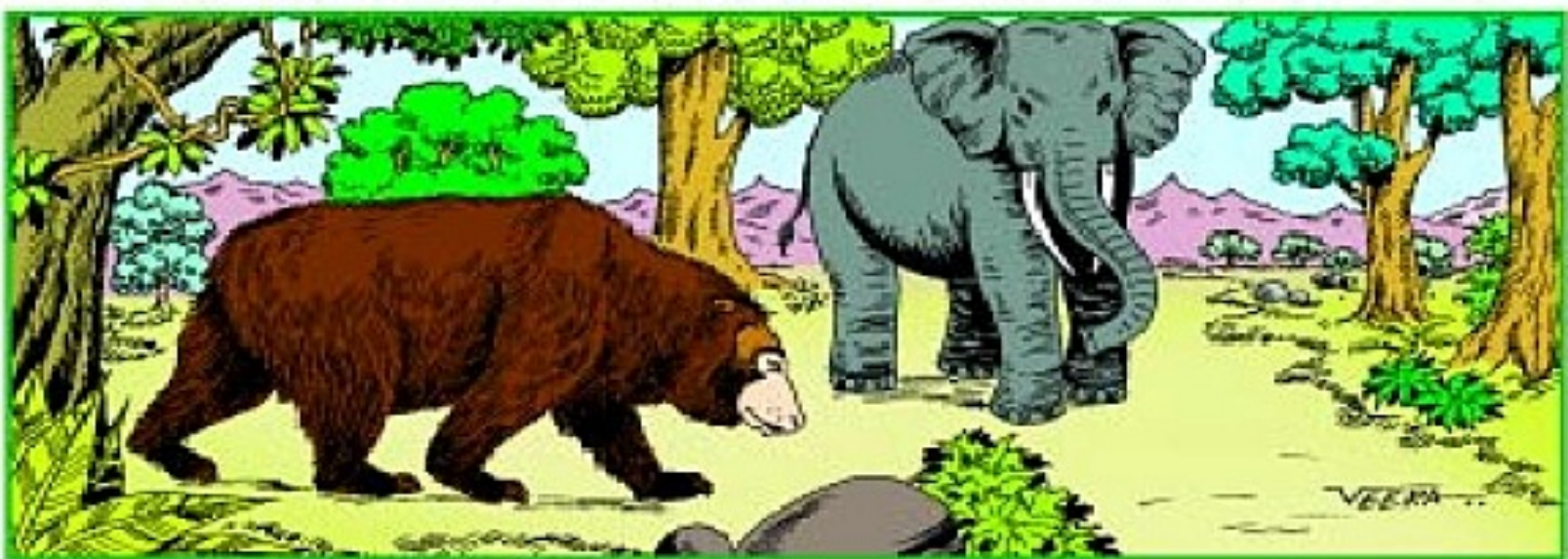
बच्चे अखबार की सुर्खियों में

छात्रा को रॉयल्टी मिली

राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण परिषद (एन सी ई आर टी), नई दिल्ली ने पहली बार अपनी एक पाठ्य पुस्तक में दसवीं कक्षा की एक छात्रा का 'यात्रा विवरण' सम्मिलित करने के बाद उसे रॉयल्टी प्रदान की। पृ.बी. माया ने यह विवरण तब लिखा था जब वह अपने पिता के साथ यात्रा कर रही थी। उसके पिता हेड मास्टर थे और स्थानान्तरण होने पर दूसरी जगह जा रहे थे। मार्ग में देखे दृश्यों और अनुभवों का उसका विवरण केरल से प्रकाशित होने वाली मलयालम की बाल पत्रिका 'यूरेका' में छपा था। एन सी ई आर टी ने इस लेख को पाठ्य पुस्तक में फिर से छापकर उस बाल लेखिका को तीन हजार रुपये की रायल्टी प्रदान की। जब माया ने यह लेख लिखा था तब वह छठी कक्षा की छात्रा थी।

गिनीज द्वारा मान्यता

निश्चल नारायणन केवल ११ वर्ष का है। उसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में प्रवेश मिल चुका है। उसे १५ श्रेष्ठ निर्णायकों के समक्ष बेतरतीब ढंग से रखी २२५ वस्तुएँ दिखाई गईं। उसने दुबारा देखे बिना ठीक उसी क्रम में दुहरा दिया। उसने अपने ही टीचर जयसिम्हा रविराला का रिकार्ड तोड़ दिया जिसने दिसम्बर २००५ में २०० वस्तुओं को याद रखने का रिकार्ड बनाया था। हैदराबाद के गीतांजलि स्कूल के छठी कक्षा के निश्चल ने २० अगस्त को यह कीर्तिमान स्थापित किया। उसकी अन्य उपलब्धियों में हैं- ६ वोल्यूम की पुस्तक तथा गणित के सिद्धान्तों को सरल बनाने के लिए प्राथमिक गणित प्रयोगशाला का सृजन। इससे भी बढ़कर है बिना सोचे शतरंज खेलने में दक्षता।

न्यूट्रिन प्रश्नोत्तरी-२

१. खनिज पदार्थों की कठोरता को मापने के लिए किस माप का प्रयोग होता है?

अ) रिक्टर स्केल आ) मोह का स्केल

इ) क्रोमोग्राफ ई) स्पेक्टोग्राफ

२. अंडमन द्वीप समूह में कितने द्वीप हैं?

अ) ५० आ) २०५

इ) २०० ई) ८५

(उत्तर पृष्ठ ६३ पर)

पुण्य-पाप

कांचनदेश के राजा धीरसिंह के आस्थान की नर्तकी थी, बसंतमालिनी। यद्यपि उसका जन्म साधारण परिवार में हुआ, परंतु बचपन से ही नृत्य के प्रति वह विशेष रुचि दिखाती हुई आयी और बालिग होते-होते सुप्रसिद्ध नर्तकी बन गई और नाम कमाया। राजा ने उसकी प्रतिभा को पहचाना और उसे आस्थान नर्तकी के पद पर नियुक्त किया। उसके नृत्य बिन्यासों और असाधारण रूप भंगिमाओं को देखते हुए सबके सब मंत्रमुग्ध हो जाते थे। उस साल महारानी यामिनी देवी के जन्म दिन के अवसर पर राजधानी में बड़े पैमाने पर उत्सव मनाये जा रहे थे। उस शुभ अवसर पर प्रजा के समक्ष उसका आदर-सत्कार करने का निर्णय राजा धीरसिंह ने लिया।

परंतु, राजा का यह निर्णय अन्य कलाकारों और पंडितों को ठीक नहीं लगा। उन्हें जो गौरव नहीं मिला, वह एक राज नर्तकी को मिले, यह

उन्हें बिलकुल पसंद नहीं आया। वे इस विषय को लेकर अंदर हीअंदर कुढ़ रहे थे। मौक़ा मिलने पर उसका अपमान करने और उसे नीचा दिखाने के लिए वे तैयार बैठे थे।

उस दिन की शाम को महारानी का जन्म-दिनोत्सव मनाया जानेवाला था। बसंतमालिनी सजाये गये मंच पर बड़े ही विनय के साथ एक कोने में बैठी हुई थी।

राजा धीरसिंह ने मूल्यवान भेंटें प्रदान करके उसका सत्कार किया और उसके नृत्य की प्रतिभा की प्रशंसा करते हुए कहा, ''हमारी बसंतमालिनी किसी अप्सरा से कम नहीं है। उसका अद्‌भुत नृत्य कितना ही प्रशंसनीय है। ऐसी अद्‌भुत नर्तकियाँ बहुत ही कम होती हैं। उसका हमारे आस्थान में होना हमारा सौभाग्य है। उसके अद्‌भुत नृत्य को देखने का भाग्य देवताओं को भी नहीं मिला।''

उपस्थित प्रजा ने तालियाँ बजाते हुए अपना हर्ष व्यक्त किया। पर, राजा से थोड़ी ही दूरी पर बैठे एक पंडित ने उठकर कहा, ''महाराज, क्षमा करें। आप अपूर्व कला पोषक हैं। कलाकारों का आदर करने में आपकी बराबरी करने की क्षमता किसी और में है ही नहीं। बसंतमालिनी एक सामान्य परिवार से आयी हुई कन्या है। किन्तु आपने उसे आस्थान नर्तकी बनाया, जो आपकी उदारता का ज्वलंत उदाहरण है। परंतु, इसका यह मतलब नहीं कि आप उसकी तुलना अप्सराओं से करें। आपने ऐसा करके देवताओं

का अपमान किया। मैंने जो कहा, उसमें कोई त्रुटि हो तो मुझे क्षमा करें।''

इसके दूसरे ही क्षण एक नृत्य कलाकार उठ खड़ा हुआ और कहने लगा, ''मैंने अनगिनत नर्तकियों की नृत्य प्रतिभा देखी। बसंतमालिनी के नृत्य में स्वाभाविकता कम है और दिखावा अधिक। उसके नृत्य को देखते हुए आप ही आप हँसी फूट पड़ती है। यह दुर्भाग्य की बात है कि महाराज अपने हाथों उसका सम्मान कर रहे हैं। हमारे राज्य ने जो पाप किया, उसका यह फल है।''

वहीं बैठे आस्थान विदूषक गंगाधर शास्त्री ने उठकर कहा, ''महाप्रभु, हमारे राज्य ने जो

किसी जन्म में उसने पाप किया होगा और वह पाप अब उसका पीछा कर रहा है।''

महाराज ने विदूषक से कहा कि वे इसे विशद रूप से समझाएँ और संदेहों को दूर करें।

''साथी कलाकारों को जो आदर-सम्मान प्राप्त हो रहा है, उसे देखते हुए अन्य कलाकार ईर्ष्या के मारे जले जा रहे हैं। ऐसे लोगों के सम्मुख वसंतमालिनी को नाचना पड़ रहा है। यह उसका किया गया पाप है।'' विदूषक ने गंभीर स्वर में कहा।

इसके पहले जिन-जिन लोगों ने वसंतमालिनी की समालोचना की, उसके नृत्य को दिखावटी बताया, उन्होंने शर्म के मारे सिर झुका लिये। तब राजा ने कहा, ''ऐसे चांद की सुंदरता का आनंद कोई नहीं ले सकता, जो चांदनी को नहीं फैलाता। उसी प्रकार साथी मानव में जो अच्छाई है, शक्ति-सामर्थ्य है, उनका जो आदर नहीं करता, उनका पांडित्य निष्प्रयोजन है। ऐसे लोगों के व्यक्तित्व में वह काला धब्बा है। मुझे इस बात का दुख है कि ऐसे लोग मेरे आस्थान में मौजूद हैं।''

अपनी वाक् पटुता के बल पर जिन ईर्ष्यालु लोगों की असलियत का पर्दाफाश विदूषक ने किया, उसका सत्कार वसंतमालिनी के हाथों किया गया। जनता ने आनंद-भरित होकर जोर से तालियाँ बजायीं।

- जि.जे.जोशी (१४),
सेण्ट जॉन चर्च हाई स्कूल, हैदराबाद

पुण्य-पाप किये, इसके बारे में मैं नहीं जानता, पर इतना अवश्य जानता हूँ कि आस्थान नर्तकी वसंतमालिनी ने पुण्य-पाप दोनों किये।''

विदूषक की बातों ने महाराज में कुतूहल जगाया। उसने विदूषक से पूछा, ''ये लोग तो इसे पाप कह रहे हैं, अपमान मान रहे हैं, परंतु आपका कहना है कि हमारी नर्तकी ने पाप-पुण्य दोनों किये। यह कैसे संभव है? कृपया इसपर प्रकाश डालिये।''

विदूषक ने कहा, ''आप श्रेष्ठ कला पोषक हैं। आपके राज्य में उसका जन्म लेना उसका किया पुण्य है। इसी कारण, आप आज इस विराट सभा में उसका सत्कार कर रहे हैं। परंतु,

बूगनविलिया का पौधा

जनवरी का महीना था। वसन्त की मीठी गन्ध हवा में तैर रही थी। वर्षों पहले एक नई जिन्दगी की खोज में मैं अपना गाँव छोड़ चुका था। जब मैं उस सड़क पर आगे बढ़ा, जिस पर मैं कभी पतंग पकड़े दौड़ा करता था, मैंने यथाशक्ति अपने गाँव की हवा को साँस में भरने की कोशिश की।

जहाँ-जहाँ मेरी नज़र गई, नवजीवन का प्राचुर्य था। बागीचों में गेंदा, फ्लॉक्स और गुलाबी रंग का राज्य था। लेकिन फूलों को देखते-देखते एक पौधे पर मेरी दृष्टि टिक गई। यह बूगनविलिया का एक गुच्छा था।

और कुछ कहे-अनकहे शब्दों की एक धुंधली स्मृति ताजी हो गई।

सौम्या मेरा दोस्त नहीं था। कुछ तो इसलिए कि वह मुझसे एक साल बड़ा था; और कुछ इसलिए कि वह मेरी कक्षा में भी नहीं था। वह अनपढ़ था। किन्तु वह मेरे लिए एक दोस्त से बढ़कर था। मुझे नहीं मालूम कि मुझे पतंग उड़ाना सिखाते समय या उसे लिखना-पढ़ना सिखाते समय, कब हमलोग अभिन्न हो गये।

उसने मुझे मछली मारना और ऊँचे पेड़ों पर चढ़ना सिखाया। उसने मुझे सिखाया कि पौधों की देखभाल कैसे की जाती है। उसने मुझे प्रकृति से प्रेम करना सिखाया। "जब तुम्हारे पौधों में फूल खिलते हैं, तब इसका मतलब होता है कि तुम प्रसन्न हो और मुस्कुरा रहे हो। जब ये मुरझा जाते हैं, तब तुम उदास हो जाते हो।" ऐसे सीधे-सादे विश्वासों पर उसकी जिन्दगी आगे बढ़ रही थी। अलग-अलग रास्तों पर चलना शायद हमलोगों की नसीब में ही बदा था। मेरा परिवार बहुत दूर एक नगर में बस गया। गाँव छोड़ते समय मैंने नये घर में लगाने के लिए बूगनविलिया का एक पौधा ले लिया था, जिसे मैंने सौम्या के नाम पर रोपा था। मैं इसकी देखभाल करता रहा। जब बसन्त ऋतु आती तो इसकी कलियों को देखकर हमलोग वादे के मुताबिक एक-दूसरे को याद कर लेते।

लेकिन अपने अन्य अनेक वादों की तरह इस वादे को निभा न सका। मेरे पाँव अनायास ही सौम्या के घर की तरफ

बढ़ते गये। आश्चर्य है कि मुझे यह देखकर बिलकुल ताज्जुब नहीं हुआ कि वे अब वहाँ नहीं रहते। पड़ोसियों से उनका पता-ठिकाना पूछा। परन्तु किसी को मालूम न था।

किस्मत से, झुर्रीदार चेहरेवाला एक आदमी मिल गया जिसे मैं जानता था। वह वृद्ध व्यक्ति सौम्या को बहुत प्यार करता था। उसने यद्यपि मुझे पहचाना नहीं, फिर भी उसने बताया कि सौम्या का परिवार क ाम की तलाश में गाँव छोड़कर चला गया। कहाँ गया, वह बता नहीं सका। ''क्या तुम उसके दोस्त हो?'' अचानक वह पूछ बैठा। ''क्या उसका एक काम कर दोगे?''

मेरा उत्तर सुनने से पहले ही वह झट अपने कमरे में चला गया। उसने अपनी छोटी-मोटी चीजों में कुछ खोज-बीन की, फिर वह अपने पिछवाड़े में गया और मचोड़े हुए एक कागज के साथ एक बूगनविलिया का सूखा पौधा देते हुए बोला, ''उसने इस पौधे को रोपकर देख-भाल करने के लिए कहा था। लेकिन मैं बूढ़ा ठहरा, पानी देना भूल जाता हूँ। पौधा सूख गया है। किन्तु यह उसके बच्चे के समान है। इसे रख लो। उसने पोस्ट करने के लिए एक पत्र भी दिया है। क्या तुम इसे मेरे बदले पोस्ट क र दोगे?''

अचानक मेरा गला रुंध गया और कुछ बोल न पाया। लेकिन मैंने पौधा और पत्र दोनों रख लिये। पत्र मेरे नाम था और टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में लिखा हुआ था जो इस प्रकार था:

मेरे दोस्त,

यह मेरा पहला और हो सकता है आखिरी पत्र हो, क्योंकि हम यह गाँव छोड़कर जा रहे हैं। हमें नहीं मालूम कि कहाँ काम मिलेगा, इसलिए अपना पता नहीं बता सकता। और मैं तुम्हारा बूगनविलिया भी अपने साथ नहीं ले जा सकता। यह बड़ा हो गया है। आशा है, मेरा भी बड़ा हो गया होगा।

तुमने मुझे कोई पत्र नहीं लिखा। जानता हूँ तुम व्यस्त रहते हो। मैं बाद में तुम्हें लिखूँगा।

तुम्हारा दोस्त, सौम्या।

नीचे बहुत पुराना पता लिखा हुआ था जिसे हमलोग छोड़ चुके थे। अज्ञातनामी पत्र-पेटी में ऐसे कितने ही पत्र पड़े होंगे, मैंने सोचा।

मैंने सूखे बूगनविलिया और मचोड़े-मरोड़े पत्र को संभालकर रखा और गाँव से अलविदा लिया।

तीन वसन्तों के बाद, मेरे वातायन के बाड़े पर आराम से फैले बूगनविलिया को जब पुष्पित होते देखा तो सोचा कि सौम्या कहीं पर मुस्कुराया होगा।

सौरभ दास (१४)
बालासोर जिला स्कूल,
बालासोर (उड़ीसा)

सुदीप्ता रावल(१३), बालासोर जिला स्कूल, बालासोर, उड़ीसा

गजानन ए.यादव (१६)
यवतमाल,
महाराष्ट्र

प्रीति एम. शेट (१३)
श्री विद्या मन्दिर,
व्यालिकावल, बंगलोर

इन दो पृष्ठों पर २००६ प्रतियोगिता के पुरस्कृत चित्र दिये गये हैं। पुरस्कार हैं - प्रथम - ३००/- रु; द्वितीय-२५०/- रु; तृतीय- २००/- रु; सान्त्वना पुरस्कार प्रत्येक १५०/- रु. पुरस्कार विजेताओं को हमारी ओर से बधाई !

एस.विभा (५)
केन्द्रीय विद्यालय,
बंगलोर

मोनीदीपा राना (१२)
२४ परगना,
प. बंगाल

एस.आई. हरिता (११)
सेण्ट पीटर्स ग्रामर स्कूल,
सिकन्दराबाद
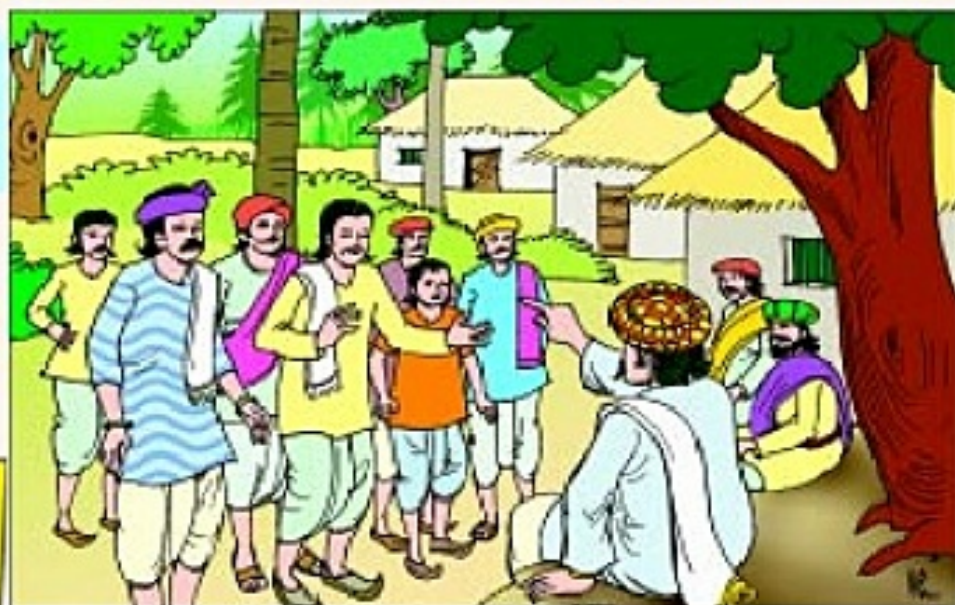
पिंजरे के पंछी

जलालपुर गाँव में सोनू और मोनू नाम के दो व्यक्ति रहते थे। सोनू खेती पर निर्भर था तो मोनू व्यापार पर। एक बार मोनू व्यापार में घाटा हो जाने के कारण दिवालिया हो गया। उसकी सारी पूंजी खत्म हो गयी। वह मदद के लिए अपने मित्र सोनू के पास पहुँचा। उसने अपने मित्र सोनू को 'कृष्ण-सुदामा की आदर्श मैत्री' की दुहाई दी।

सोनू ने मोनू को अपना एक खेत दे दिया। जब मोनू ने उस खेत को जोतवाया तब खेत क एक कोने से उसे स्वर्णाभूषणों से भरा एक कलश मिला। मोनू तत्काल कलशलौटाने के लिए सोनू के घर चला गया। सोनू ने कहा कि चूंकि उसे वह खेत दे चुका है, इसलिए उसमें से निकलनेवाली हर सामग्री पर अब मोनू का ही हक है। दोनों ने 'कलश मैं नहीं, तुम्हीं रखो' कहकर एक दूसरे को दे देना चाहा।

गाँव के लोगों ने जलालपुर गाँव के ब्लाक बहादुरपुर में रहनेवाले सरपंच रामलाल के पास मामला ले जाने को कहा। सरपंच के पास जाने पर सोनू ने एकान्त में उसे बताया कि उसका मित्र सोनू स्वाभिमानी है। खेत के अलावा आर्थिक मदद वह उससे लेता नहीं; इसलिए उसकी मदद करने के ध्येय से उसने अपनी पत्नी सुशीला और बेटी संगीता के कुछ स्वर्णाभूषण पिछली रात उस खेत में गाड़कर रख दिये थे।

सोनू की बात से प्रभावित होकर रामलाल ने कहा कि वह कलश अब मोनू ही रखे और दुनिया भर के अच्छे फल-फूल लाकर उस खेत में उगाये। बचे धन को व्यापार में लगाकर अपने पर्याप्त अनुभव से लाभ उठाये।

रामलाल की अनुमति से सोनू और मोनू का आशीर्वाद लेकर मोनू के पुत्र सूर्या ने कुछ स्वर्णाभूषण लेकर दुनिया भर के अच्छे फल-फूल के वृक्षों को खेत में लगाने का निश्चय

किया। जब सूर्या शहर जा रहा था तब मार्ग में उसने एक बहेलिये को अनेक अच्छे-अच्छे पक्षी कई पिंजरों में ले जाते हुए देखा।

सूर्या ने बहेलिये से कहा कि वह उसके सभी स्वर्णाभूषण ले ले और अपने पिंजरे के पंछियों को उसे सौंप दे। बहेलिये ने खुशी-खुशी सूर्या के स्वर्णाभूषण लेकर अपने सातों पिंजरे उसे सौंप दिये। सूर्या ने सभी रंग-बिरंगे पक्षियों को पिंजरे खोल-खोलकर स्वतंत्र कर दिया। फिर थका होने के कारण वह सो गया। सोकर उठने के बाद वह शहर चला गया और वहाँ एक सेठ के यहाँ नौकरी करने लगा।

लगभग डेढ़-दो वर्ष तक सूर्या ने शहर में खूब परिश्रम किया। कुछ अच्छी धनराशि एकत्र हो जाने के बाद जब वह अपने गाँव पहुँचा तब उसके घर में उसकेपिता और सोनू बैठकर बातें कर रहे थे। सूर्या को देखते ही मोनू ने उसे हाथों हाथ लिया और बताया कि जाने कहाँ-कहाँ के ढेर सारे पक्षी आकर उसके द्वारा तैयार किये गये खेत में दुनिया भर के फल-फूलों के बीज डाल गये हैं जिससे उस क्षेत्र को 'मनोरम वाटिका' कहा जाने लगा है।

यह सब सुनकर सूर्या ने कहा, ''यह सारा चमत्कार उन्हीं पिंजरों के देव पक्षियों का है। जरूर वे देवलोक से आये पक्षी थे, जिन्हें आजाद करके मैंने पुण्य कमाया और वृक्षारोपण में उनका सहयोग भी संभव हो सका। मेरी मेहनत की कमाई भी मेरे पास है जिस पर आपका पहला अधिकार है।'' इसे सुनकर सोनू और मोनू दोनों खुश हुए।

दूसरे दिन मोनू अपने बेटे को लेकर सोनू के घर गया और सोनू से कहा, ''सोनू, मैं तुमसे मेरे बेटे के लिए तुम्हारी बेटी संगीता का हाथ माँगने आया हूँ। इसमें तुम्हारी राय क्या है?''

इसे सुनकर सोनू खुशी से फूला न समाया। इतने में वहाँ आये सरपंच रामलाल इनकी बातें सुनकर बोले, ''अरे वाह! मुझे तो तुम दोनों की दोस्ती को देखकर आश्चर्य होता था। अब तुम दोनों सम्बन्धी बननेवाले हो। बहुत खुशी की बात है। भगवान सदा तुम दोनों परिवारों को सुखी रखे।'' यह कहकर वे वहाँ से चले गये।

सुरभि श्रीवास्तव(१४), नन्द विकास विद्यालय, गोरखपुर, उत्तरप्रदेश

मीना की गुड़िया

मीना चित्रपुर में रहती थी। वह चतुर, अच्छे स्वभाव की और एक मधुर लड़की थी। उसे उसके माता-पिता बहुत प्यार करते थे। आज वह बहुत उत्तेजित थी, क्योंकि उसका भाई उसके जन्मदिन पर उसके साथ रहने के लिए अमेरिका से आ रहा था। वह उसके लिए एक सुन्दर अमरीकी गुड़िया लेकर आ रहा था।

मीना अपने भाई को लाने के लिए अपने माता-पिता के साथ हवाई अड्डे पर गई। विमान दो घण्टे लेट था।

मीना का भाई जब इन सबसे मिला तो वह खुशी से उछलने लगी। घर लौटते समय मार्ग में उसके भाई ने अपने कॉलेज तथा अमरीकी विश्वविद्यालय में जीवन के बारे में बताया। मीना ने पहले ही इंजीनियर बनने का तथा ऊँची पढ़ाई के लिए विदेश जाने का संकल्प कर लिया था।

जब वह सो गई तब अपने भावी कालेज के बारे में सपना देख रही थी। वह एक मेधावी छात्रा थी और हमेशा अच्छे अंक लाती थी।

अगले दिन उसका जन्म दिन था। उसे अनेक सुन्दर उपहार मिले, किन्तु सर्वश्रेष्ठ भेंट थी सुन्दर अमरीकी गुड़िया जो उसके भाई ने दी थी। उस मनोहर गुड़िया के बाल सुनहले थे और परिधान हरा। जब मीना उसे ऊपर-नीचे करती तो गुड़िया अपनी आँखें बन्द कर लेती और खोल देती। यह एक अनोखी, सबसे अलग और अन्य गुड़ियों से कहीं श्रेष्ठ थी। यह स्वाभाविक था कि मीना उस गुड़िया को अपनी सहेलियों को भी दिखाना चाहती थी।

इसलिए उसने गुड़िया को अपने स्कूल बैग में डाल लिया। कक्षा में अध्यापिका क्या पढ़ा रही है, उस पर वह ध्यान केन्द्रित नहीं कर सकी। उसका मन पूरी तरह गुड़िया पर था जो उसके बैग में सो रही थी। इतिहास की अध्यापिका ने देखा कि मीना का ध्यान कक्षा में नहीं है और वह दिवा-स्वप्न देख रही है। इसलिए उसने उसे डाँटा। मीना घबरा गई और धीरे से उसने गुड़िया को स्पर्श किया। उसे महसूस हुआ कि उसने कोई बटन दबा दिया है।

तभी घण्टी बज गई। अगला पिरियड मराठी का था। अध्यापिका ने कक्षा में

प्रवेश किया। वह भूकम्प की कटिंग्स तथा पिक्चर्स लायी थी। वह बच्चों को भूकम्प के बारे में पढ़ाने लगी।

लेकिन मीना सिर्फ अपनी गुड़िया के बारे में सोच रही थी। और बीच-बीच में छिपकर उसे देख रही थी। उसकी अध्यापिका को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि चुलबुली, उत्सुक और उत्साही मीना आज इतनी शान्त क्यों है। उसने एक भी प्रश्न नहीं किया।

तीसरा पिरियड आरम्भ होने से थोड़ा पहले दीवार धीरे-धीरे काँपने लगी। पहले किसी ने ध्यान नहीं दिया; तब पूरी बिल्डिंग में बहुत तेजी से कम्पन हुआ और दीवार गिर गई। बच्चे बाहर नहीं जा सके।

मीना बहुत भयभीत थी। उसने अपनी गुड़िया को अपने बहुत पास कर लिया और गुड़िया ऊँची आवाज में बोलने लगी: ''यदि भूकम्प आ जाये तब पहले बाहर जाने की कोशिश करो। यदि वह सम्भव न हो तब मेज, डेस्क या चारपाई के नीचे घुस जाओ और हाथों को गर्दन पर रख लो।'' मीना ने तुरन्त समझ लिया कि अध्यापिका के शब्द गुड़िया में रिकार्ड हो गये हैं। इसलिए अपनी मशीन में किये गये रिकार्ड को गुड़िया ने दुहरा दिया। मीना ने बटन को फिर दबाया और गुड़िया चिल्ला पड़ी, ''भूकम्प, भूकम्प।''

गुड़िया की ऊँची आवाज लोगों और बचाव-कर्मियों तक पहुँच गई। उन्हें पता चल गया कि बच्चे मलबे के नीचे फँस गये हैं। वे सहायता के लिए पहुँच गये और मीना की कक्षा के सभी बच्चों को बचा लिया गया।

मीना की सहपाठियों ने उसे उनकी जानें बचाने के लिए धन्यवाद दिया। किन्तु मीना ने कहा कि यह श्रेय उसकी गुड़िया को मिलना चाहिये। उसके भाई ने उसे बधाई दी और कहा, ''यदि तुमने गुड़िया को 'भूकम्प-भूकम्प' दुहराने के लिए नहीं कहा होता तो तुम सब को खोज पाना सम्भव न होता।''

मीना बहुत प्रसन्न थी। उसने अपने भाई को गुड़िया के लिए एक बार फिर धन्यवाद दिया, जिसने उनकी सारी सहेलियों की रक्षा की। उसके भाई ने उसे कहा कि यदि वह ध्यान से अध्ययन करती रही तो उसके अगले जन्मदिन पर वह उसे एक कम्प्यूटर का उपहार देगा। यह सुनकर मीना खुशी से नाचने लगी।

यशश्री एस. पाटिल(११),
श्रीमती शीला देवी शिण्डे सरकार
हाई स्कूल, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

मुरली का जादू

नुआंगा स्कूल के हेड मास्टर ने अपनी ऑफिस में दीवार-घड़ी पर नजर डाली। एक बज चुका। लंच ब्रेक का समय। लेकिन उसने घण्टे की आवाज नहीं सुनी। क्या प्यून घण्टा लगाना भूल गया? उसे सन्देह हुआ।

अचानक मुरली की मधुर ध्वनि सुनाई पड़ी। करीब उसके साथ-साथ ही घण्टे की आवाज आई। बच्चे रिसेस का आनन्द लेने के लिए दौड़कर बाहर आने लगे। कुछेक ब च्चे स्कूल के कम्पाउण्ड में एक पेड़ के नीचे एक नौ वर्ष के लड़के को घेरकर खड़े हो गये। वह मुरली बेचनेवाला राधू था।

वह हर रोज लंच के समय स्कूल में आया करता था। वह जैसे ही मुरली बजाना आरम्भ करता, प्यून समझ जाता कि घण्टा बजाने का समय हो गया। उसे घड़ी देखने की जरूरत नहीं पड़ती थी। यह दोनों के लिए आदत बन गई थी।

राधू की मुरली के संगीत के बहुत बच्चे प्रशंसक बन गये थे। कुछेक तो अपना टिफिन भी उसके साथ मिलकर खाने लगे। कुछ अध्यापकों ने इसे पसन्द नहीं किया; जैसे चौथी कक्षा के क्लास टीचर मि.पात्रो। उसे लगा कि मुरली बेचनेवाला अवांछनीय तत्व होने के साथ-साथ बच्चों को खराब भी कर रहा है। उसने हेडमास्टर को शिकायत की।

हेड मास्टर राधू के पास गया और वहाँ एकत्र बच्चों को डाँटकर क्लास में भेज दिया। फिर राधू को आँखें दिखाते हुए कहा, ''यहाँ से चले जाओ! और स्कूल में फिर कभी नहीं आना!''
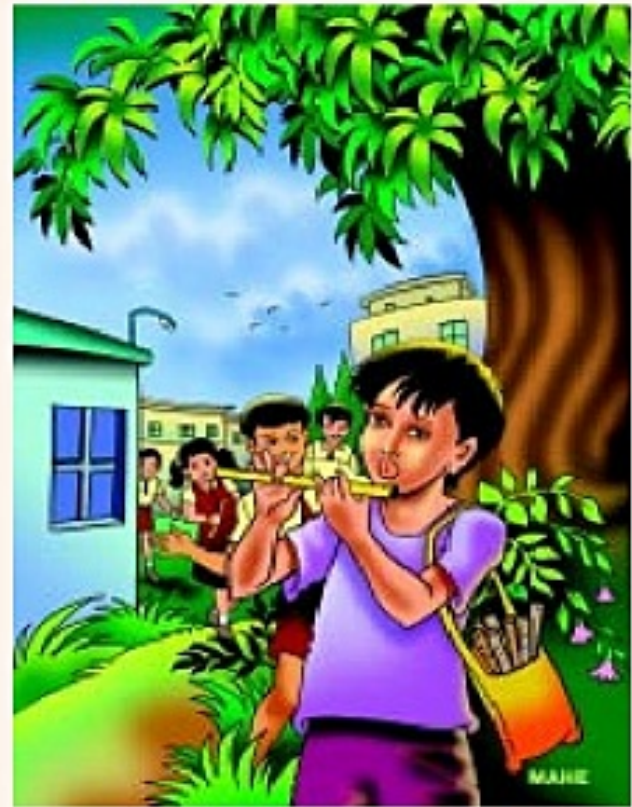
राधू कुछ दिनों तक स्कूल नहीं आया। प्यून को उसकी कमी खटकने लगी, हालांकि दोपहर का घण्टा बजाने के लिए वह बहुत सावधानी बरतने लगा। बच्चे उदास हो गये क्योंकि वे अब राधू की मुरली के संगीत से वंचित हो गये थे और हर रोज उसका साथ भी छूट गया था, यद्यपि वह कुछ मिनटों के लिए ही होता था।

एक दिन, मानो कोई चमत्कार हो गया हो, मुरली की चिर परिचित धुन फिर सुनाई पड़ी। साथ-साथ लंच का घण्टा भी बज उठा। बच्चे सीधे राधू की तरफ दौड़ पड़े। आज उसकी बहुत मुरलियाँ बिक गईं। वह ब च्चों को मुरली बजाना सिखा भी रहा था।

मि.पात्रो को मुरलीवाले की वापसी अच्छी

नहीं लगी। वह हेड मास्टर को बुला कर ले आया। उसे आते देखकर बच्चों की भीड़ तितर-बितर हो गई। कुछ बच्चे अब भी राधू के आस-पास मंडरा रहे थे। हेड मास्टर गुस्से से तमतमाता सीधा राधू के पास गया और बिना कुछ बोले उसके गाल पर कसकर एक तमाचा जड़ दिया। वह कुछ क्षणों के लिए हक्का-बक्का हो गया। उसकी आँखों से आँसुओं की गंगा-जमुना बह पड़ी।

हेड मास्टर घबरा गया। क्या उसने उसे ज्यादा कठोर सजा दे दी! उसने अपना पर्स निकाला और राधू की ओर एक नोट बढ़ा दिया। किन्तु उसने विनयपूर्वक अस्वीकार कर दिया। ''सर, मैं कभी इस स्कूल में तीसरी कक्षाका छात्र था। एक सड़क दुर्घटना में मेरे माता-पिता की अचानक मृत्यु के कारण मेरी पढ़ाई रुक गई क्योंकि अप ने माता पिता की मैं एकमात्र सन्तान था, और मेरे परिवार में मेरी देखभाल करनेवाला कोई और नहीं था। मुझे गरीबी का सामना करना पड़ा, इसलिए मैंने मुरली बेचने का फैसला किया। सर, मैं अपने स्कूल को किसी तरह भूल नहीं पा रहा हूँ और यहाँ के बच्चों के साथ दोस्ती करना अच्छा लगता है। इसी आकर्षण के कारण मैं यहाँ खिंचा चला आता हूँ। मैं स्कूल से दूर कैसे रह सकता हूँ! किन्तु यदि आपको ऐसा महसूस होता हो कि मैं आपके लिए एक समस्या हूँ तो मैं चला जाऊँगा। हेड मास्टर राधू की दुखभरी कहानी सुन कर अवाक् रह गया। उसने मि.पात्रो की ओर देखा। वह भी स्तंभित था।

''मुझे खेद है मेरे बच्चे। मुझे क्रोध नहीं करना चाहिये था। मत सोचो कि तुम अनाथ हो। हमलोग तुम्हारी देखभाल करेंगे। तुम्हें अपनी पढ़ाई जारी रखनी चाहिये। कल स्कूल में आ जाना। तुम्हें चौथी कक्षा में दाखिला मिल जायेगा।'' हेड मास्टर ने सान्त्वना देते हुए प्यार से राधू को कहा।

दूसरे दिन, प्रातः असेम्बली के समय हेड मास्टर को राधू के पाकेट से एक मुरली झाँकती दिखाई पड़ी। उसने राधू से असेम्बली आरम्भ होने से पहले मुरली पर एक प्रार्थना की धुन बजाने के लिए कहा। वास्तव में, तब से यह दैनिक कार्यक्रम का हिस्सा बन गया।

- रजत कुमार त्रिपाठी (१४),
बालासोर जिला स्कूल, बालासोर (उड़ीसा)
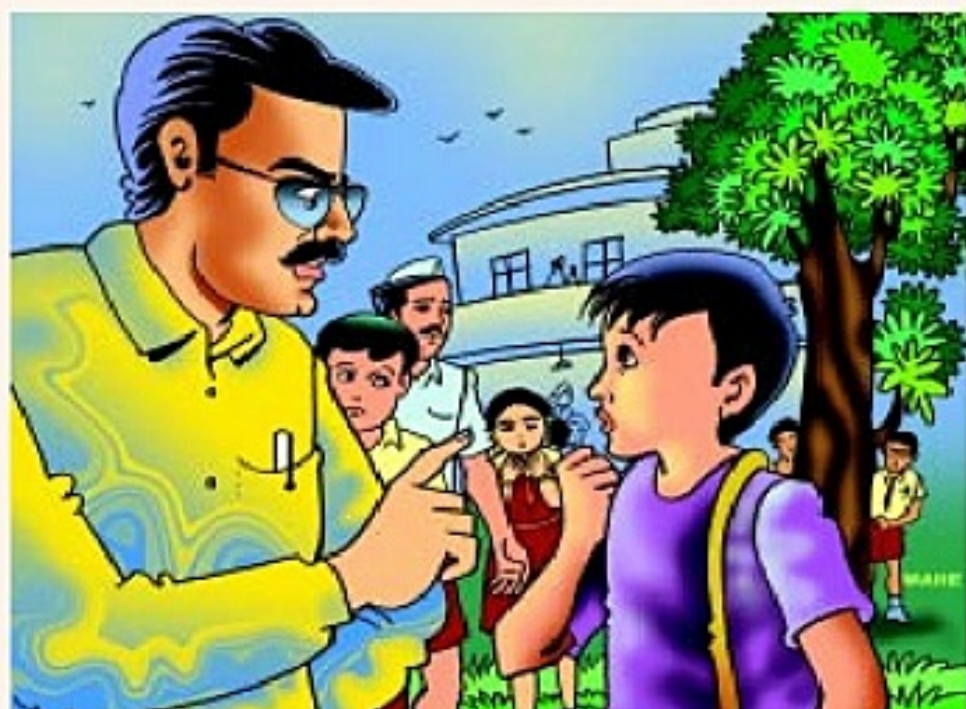
महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ - ११

सम्राट के लिए– और सब के लिए एक सबक

दूसरी शताब्दी में रोम पर एक बड़ा समर्थ सम्राट राज्य करता था, जिसका नाम था हैड्रियन। उस जमाने में कोई सत्ताधारी मनुष्य बिना किसी अंगरक्षक के अकेला घूम सकता था। एक दिन दोपहर में जब युवा सम्राट घोड़े पर सवार हो एक गाँव से गुजर रहा था तब उसने देखा कि एक वृद्ध व्यक्ति तपती धूप में झुककर कुछ फलों के पौधे रोप रहा है।

सम्राट ने रुककर पूछा, ''मेरे प्रिय नागरिक, आप की उम्र क्या होगी?''

''निश्चित रूप से तो नहीं कह सकता परन्तु करीब सौ बर्ष तो ज़रूर होगी !'' ग्रामीण ने सम्राट को सलाम करते हुए कहा।

''मुझे तुम पर रहम आता है; क्या तुमने जवानी में कमा कर बुढ़ापे के लिए कुछ धन नहीं जमा किया?'' सम्राट ने पूछा।

''मैंने जीवन भर पूरी ईमानदारी से अपने अच्छे खेतों पर काम किया और मेरे अच्छे खेतों ने मुझे कभी निराश नहीं किया। मैं समझता हूँ कि भगवान से बुलावा आने तक मेरे पास निर्वाह के लिए काफी धन है।''

''बिलकुल ठीक, फिर सौ बर्ष की आयु में खेतों में पेड़ रोपने की क्या आवश्यकता है? क्या तुम्हें यह उम्मीद है तुम इन पेड़ों के फलने तक जीवित रहोगे?'' सम्राट ने तिरस्कार के भाव के साथ पूछा।

"प्रभु, अपनी युवावस्था में जब मैंने यह जमीन खरीदी थी, तब इसमें बहुत वृक्ष लगे थे। इनके फलों को जीवन भर खाता रहा, परन्तु उनमें से किसी वृक्ष को मैंने नहीं लगाया था। मैं इन वृक्षों को इसलिए रोप रहा हूँ ताकि इसके फलों को मेरे बाद दूसरे लोग खा सकें। मुझे फलों का लालच नहीं है, बल्कि इन्हें रोपने में रुचि है। फिर भी, इनके फलों का आनन्द लेनेवालों में मैं भी शामिल हो सका तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा। और यदि भगवान ने चाहा तो फलों का एक टोकरा अपने सम्राट को भी भेंट करूँगा!"

सम्राट हँस पड़ा। "मेरी शुभकामना तेरे साथ है, मेरे आदरणीय मित्र!" इतना कह कर सम्राट चलता बना।

कुछ वर्षों के पश्चात एक दिन सम्राट अपने महल की खुली छत पर टहल रहा था। उसने देखा कि एक वृद्ध व्यक्ति अपनी पीठ पर एक बोरा लादे महल के मुख्य द्वार तक आया जिसे द्वारपालों ने अन्दर आने से रोक दिया। सम्राट ने वृद्ध व्यक्ति को कुछ देर तक ध्यान से देखा।

फिर उसने द्वारपालों को उसे महल के अन्दर ले आने का आदेश दिया। और उसके स्वागत के लिए स्वयं नीचे आया। सचमुच, यह वही ग्रामीण था, जो अब सौ से ऊपर होगा, जिसे सम्राट ने कुछ वर्ष पूर्व फलों के वृक्ष रोपते देखा था। वह पके फलों की पहली फसल लेकर सम्राट को भेंट देने आया था।

सम्राट ने भेंट को स्वीकार कर उस व्यक्ति को गले से लगा लिया और उसके टोकरे को स्वर्ण मुद्राओं से भर दिया। उसने दरबारियों को बताया कि उसने, सद्‌भावना और आशावादिता की शक्ति क्या होती है, अब समझ लिया है। ***(एम.डी.)***

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-८

(सितम्बर २००६)

अभिषेक मौर्य

C/o. डॉ.आर.के.मौर्य, स्टेशन रोड, पो.परासिया

जि.छिंदवाड़ा - ४८०४४१. (म.प्र.)

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-८ के उत्तर :

१. अपने ही शिकारी कुत्तों का शिकार। यूनान की पूर्व गाथा, ऐक्टियों; डायाना
२. १६० करोड।
३. कमला। बबूल तालाब की पिशाचिनी ।
४. फाहियान।
५. मणिपुर।
६. मांत्रिक की ज़िन्दगी।
७. मूकाभिभूत राजा (एक संथाली लोक कथा)

चन्दामामा प्रश्नावली-१०

Co-sponsored by
Infosys FOUNDATION,
Bangalore

जो सही उत्तर देंगे,
उनमें से एक को २५० रुपये
दिये जायेंगे।*

*सही उत्तर देनेवाले एक से अगर अधिक हों तो पुरस्कार की रक़म ड्रा द्वारा निकाले गये सही उत्तर देनेवाले पाँच लोगों में समान रूप से बाँटी जायेगी।

इस प्रश्नावली में जो भी प्रश्न पूछे गये हैं, वे सबके सब जनवरी व दिसंबर २००५ के बीच में चन्दामामा के अंकों में प्रकाशित कहानियों व शीर्षकों में से लिये गये हैं, जिन्हें आप पढ़ चुके हैं। वे यदि याद हों तो इन सबके उत्तर आप तुरंत बता सकेंगे। यदि याद नहीं हों तो बारहों अंकों को सामने रख लें और पन्ने पलटें तो उन्हें आसानी से जान जायेंगे। अवश्य ही बड़ा मज़ा आयेगा।

आपको यह करना है: १. उत्तर लिखिये, २. अपना नाम और उम्र (१६ वर्ष की उम्र के अंदर होना आवश्यक है); पिनकोड सहित सही पता हो, ३. एक परिवार में सिर्फ एक ही सदस्य भाग लें, ४ अभिदाता हों तो वह संख्या लिखिये, ५. लिफ़ाफे पर **चन्दामामा प्रश्नावली-१०** लिखें और उसे चन्दामामा के पूरे पते पर हमें भेजिये, ६. नवम्बर महीने के अंत तक आपकी प्रविष्टि हमें मिल जानी चाहिये, ७. जनवरी महीने के अंक में परिणाम प्रकाशित किये जायेंगे।

१. गिन्नीज प्रतिनिधियों के समक्ष दांत की तीली पर २५ बलयों के सुंदर हार को नक्काशनेवाले निपुण का क्या नाम है? वह किस प्रांत का था?

२. युवरानी के स्थूल काय को कम करने के लिए एक वैद्य ने एक चिकित्सा की, जो चिकित्सा नहीं है। वह कौन-सी चिकित्सा है? यह किस कहानी में है?

३. वे कलाकार कौन हैं, जो हमारे देश में "लघु" चित्रकला ले आये?

४. कब अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस मनाया जाता है?

५. बौद्ध धर्म को स्वीकार करनेवाली प्रथम महिला कौन है?

६. "मिज़ोराम" का शब्दार्थ क्या है?

७. कत्थकली अभिनय कला किस प्राचीन शैली की शाखा है?

८. "बाह्य सौन्दर्य से आकर्षित होने के कारण ही राजा की यह दुर्गति हुई है। वे नहीं चाहते थे कि ऐसी गलती फिर से दुहरायी जाए। इसी वजह से राजा ने सुन्दर स्त्री का तिरस्कार किया।" उस राजा का नाम क्या है? वह किस कहानी में आता है?

९. यह चित्र किस कहानी का है?

नवकोटि नारायण

किसी जमाने में ब्रह्मदत्त काशी पर राज्य करते थे। उनके शासन-काल में काशी में एक बड़ा धनी व्यक्ति रहता था। उसने नौ करोड़ रुपये कमाये। इसलिए, इस बीच जब उसके एक पुत्र पैदा हुआ तो अमीर ने उसका नामकरण नवकोटि नारायण किया।

अमीर आदमी अपने बेटे नारायण की हर इच्छा की पूर्ति करता था। इसका नतीजा यह हुआ कि बालक नारायण नटखट और उद्दण्ड हो गया। नारायण जब जवान हुआ, तब अमीर ने एक सुंदर कन्या के साथ उसकी शादी कर दी। लेकिन इसके थोड़े ही दिन बाद अमीर का देहांत हो गया।

बचपन से नारायण पानी की तरह धन ख़र्च करता गया। आख़िर उसके पिता की मौत के समय तक सारी संपति स्वाहा हो गई। उल्टे क़र्ज का बोझ उसके सर पर आ पड़ा। कर्ज़दारों ने आकर क़र्ज चुकाने के लिए उस पर दबाव डालना शुरू किया। उस हालत में नारायण को अपनी ज़िंदगी के प्रति विरक्ति पैदा हो गई। उसने सोचा कि इस अपमान को सहने केबदले कहीं मर जाना अच्छा है! आख़िर उन से बचने के ख़्याल से बोला, ''महाशयो, मैं गंगा के किनारे अमुक पीपल के पेड़ के पास जा रहा हूँ। वहाँ पर मेरे पुरखों द्वारा गाड़ा हुआ ख़जाना है! आप लोग ऋण-पत्र लेकर कृपया वहाँ पर आ जाइयेगा।''

क़र्जदार नारायण की बातों पर यक़ीन करके गंगा के किनारे पहुँचे। नारायण ने ख़जाने को ढूँढ़ने का अभिनय किया। क़रीब आधी रात तक इधर-उधर खोजता रहा। आख़िर कर्ज़दारों को बेख़बर पाकर नारायण, ''जय परमेश्वर की'' चिल्ला कर गंगा में कूद पड़ा। गंगा की धारा उसे दूर बहा ले गई।

उस जमाने में बोधिसत्व एक हिरन का जन्म
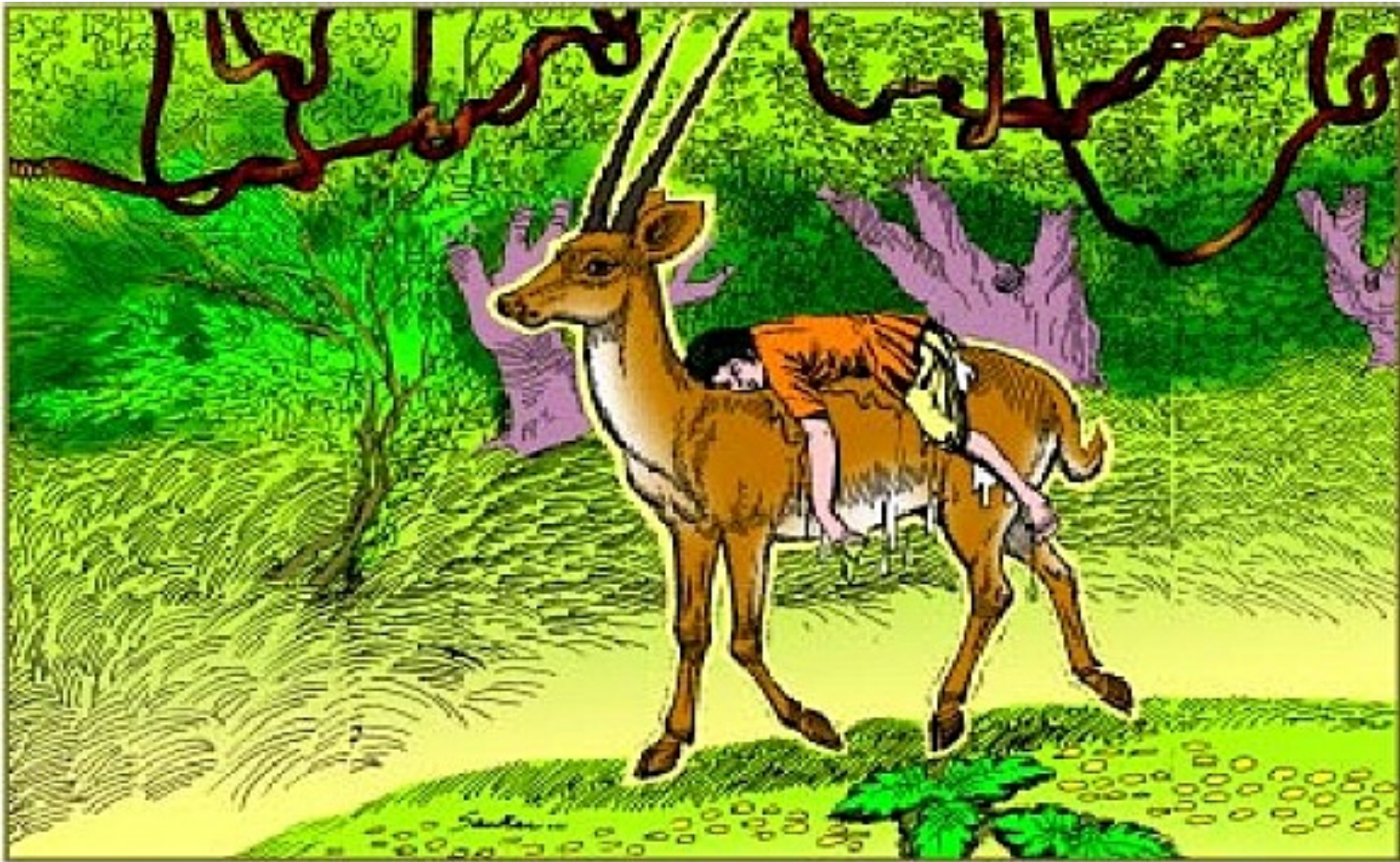
धारण कर अन्य हिरनों से दूर गंगा के किनारे एक आम के बगीचे में रहने लगा था। उस हिरन की अपनी एक अनोखी बिशेषता थी। उसकी देह सोने की कांति से चमक रही थी। लाख जैसे लाल खुर, चाँदी के सींग, हीरों की कणियों के समान चमकनेवाली आँखें, उसकी आकृति की विशेषताएँ थीं। आधी रात के वक़्त उस हिरन को एक मनुष्य की करुण पुकार सुनाई दी। हिरन यह सोचते हुए कि यह कैसा आर्तनाद है, नदी में कूदकर उस आवाज़ की दिशा में तैरते हुए नारायण के पास पहुँचा।

"बेटा, तुम डरो मत, मेरे साथ चलो।" यों उसे हिम्मत बँधा कर हिरन ने नारायण को अपनी पीठ पर चढ़ाया और उसको अपने निवास तक ले गया। नारायण के होश संभालने तक हिरन जंगल से फल ले आया और उसकी भूख मिटाई।

एक दिन हिरन ने नारायण को समझाया, "बेटा, मैं तुम्हें जंगल पार कराकर तुम्हारे राज्य का रास्ता बता देता हूँ। तुम अपने गाँव चले जाओ। लेकिन मेरी एक शर्त है, राजा या कोई और व्यक्ति भले ही तुम पर दबाब डाले, या लोभ दिखावे, तुम यह प्रकट न करना कि अमुक जगह सोने का हिरन है।"

नारायण ने हिरन की बात मान ली। उसकी बातों पर विश्वास करके हिरन ने नारायण को अपनी पीठ पर बिठाया, और जंगल पार करा कर उसे काशी जानेवाले रास्ते पर छोड़ दिया।

नारायण जिस दिन काशी नगर में पहुँचा,

उस दिन वहाँ पर एक अद्भुत घटना हुई। वह यह कि रानी को सपने में एक सोने के हिरन ने दर्शन देकर उसे धर्मोपदेश किया था।

रानी ने राजा को अपने सपने का समाचार सुनाकर कहा, ''अगर दुनिया में ऐसा हिरन न होता तो मुझे कैसे दिखाई देता? चाहे वह कहीं भी क्यों न हो, उसे पकड़ लाने पर मेरे प्राण बच सकते हैं, वरना नहीं।''

रानी के वास्ते हिरन मँगवाने के लिए राजा ने एक उपाय किया। उन्होंने एक हाथी के हौदे पर एक सोने का बक्स रखवा दिया और उसमें एक हज़ार सोने के सिक्के भरवा दिये। तब निश्चय किया कि उसका जुलूस निकाला जाये और जो आदमी सब से पहले सोने के हिरन का समाचार देगा, उसको बक्स के भीतर के सोने के सिक्के उपहार के रूप में दिये जायेंगे। इस आशय का ढिंढोरा सब जगह पिटवाया गया। उसी वक़्त नारायण काशी नगर में पहुँचा।

उसने सेनापति के पास पहुँच कर निवेदन किया, ''महाशय, मैं उस सोने के हिरन का सारा समाचार जानता हूँ। आप मुझे राजा के पास ले जाइये।''

इसके बाद नारायण ने राजा और उनके परिवार को साथ ले हिरन का निवास दिखाया। वह थोड़ी दूर जा खड़ा हुआ।

राजा के परिवार ने कोलाहल करना शुरू किया। हिरन के रूप में रहनेवाले बोधिसत्व ने उनकी आवाज़ सुनी।

'शायद कोई महान अतिथि आया होगा। उनका स्वागत करना चाहिए।' यों सोचकर वह

उठ खड़ा हुआ और सब लोगों से बचकर वह सीधे राजा के पास पहुँचने के लिए दौड़ा।

हिरन की तेज गति को देख राजा आश्चर्य में आ गये। धनुष और बाण लेकर हिरन पर निशाना लगाया। इस पर हिरन ने पूछा, ''महाराज, रुक जाइये! आपको किसने मेरे निवास का पता बताया है?''

राजा के कानों में ये शब्द बड़े ही मधुर मालूम हुए। स्वतः ही उनके हाथों से धनुष और बाण नीचे गिर गये।

बोधिसत्व ने मीठे स्वर में फिर राजा से पूछा, ''महाराज, आपको किसने मेरे निवास का पता बताया है?''

राजा ने नारायण की ओर उंगली का इशारा किया।

इस पर बोधिसत्व ने यों तत्वोपदेश किया, ''शास्त्रों में वर्णित ये बातें बिलकुल सही हैं कि इस दुनिया में मनुष्य से बढ़कर कोई भी प्राणी कृतघ्न नहीं है। जानवर और चिड़ियों की भाषा भी समझी जा सकती है, लेकिन मनुष्य की बातों को समझना ब्रह्मा के लिए भी संभव नहीं है।'' इन शब्दों के साथ बोधिसत्व ने वह सारा वृत्तांत राजा को सुनाया कि उसने नारायण की रक्षा करके कैसे उससे बचन लिया था। राजा ने क्रोध में आकर कहा, ''ओह, यह बात है! ऐसे कृतघ्न दुनिया के लिए भी बोझीले हैं। यह महान पापी है। मैं अभी इसका बध करता हूँ।'' यों कहकर राजा ने अपने तरकस से तीर निकाला।

बोधिसत्व ने राजा को रोकते हुए कहा, ''महाराज, इसके प्राण न लीजिये। अगर यह ज़िंदा रहेगा तो कभी-न-कभी अपनी भूल समझकर यह अपनी ज़िंदगी को सुधार लेगा। आप कृपया अपने बचन के मुताबिक़ उसे जो पुरस्कार मिलना चाहिए, उसको दे दीजिए। यही बात न्याय संगत है।''

राजा ने बोधिसत्व के उपदेश का पालन किया।

बोधिसत्व की उदारता, क्षमा आदि महान गुणों को राजा ने समझ लिया। उनको एक महात्मा मानकर अपने राज्य के सलाहकार के रूप में नियुक्त किया।

रामायण

उस दिन रात को भारद्वाज ने कई कहानियाँ सुनाईं। उन्हें सुनकर वे तीनों आराम से सो गये।

अगले दिन सवेरे उन्हें कुछ दूर तक भारद्वाज छोड़ने आये। उन्होंने चित्रकूट जाने के लिए रास्ते के कई चिह्न बताये।

सीता, राम और लक्ष्मण उनके बताये हुए रास्ते पर चलते-चलते उस जगह पहुँचे, जहाँ यमुना नदी पार करने के लिए एक घाट था।

वहाँ लक्ष्मण ने एक तमेड़ बनाई। उस पर जामुन की टहनियों और बेलों से सीता के लिए एक आसन बनाया। वे भी अपनी वस्तुएँ तमेड़ पर रख नदी पार गये।

यमुना नदी के बीच में आकर सीता ने उसी प्रकार यमुना को भी नमस्कार किया जिस प्रकार गंगा को किया था। उसने मनौती की कि वह गौवें दान देंगी। वसन्त का समय था। इसलिए वन की शोभा निराली थी। पेड़ों पर रंग-बिरंगे फूल थे। सीता वसन्त की शोभा देखकर आनन्दित होने लगी।

लक्ष्मण उनके आगे-आगे जा रहे थे, जो जो फूल या फल वे माँगती वह लाकर देते, जो जो प्रश्न पेड़ों के बारे में पूछती, सब बताते।

उन्होंने रास्ते में जैसे तैसे अपनी भूख मिटायी। एक समान-स्थल देखकर वे वहीं सो गये।

सवेरा होते ही राम उठे। लक्ष्मण को उठाकर वे चित्रकूट की ओर चल पड़े।

चित्रकूट प्रान्त में राम ने एक सुन्दर जगह देखकर वहाँ पर्णशाला बनाने के लिए उन्हें कहा।

लक्ष्मण बड़े-बड़े तने काटकर लाये। उन पर उन्होंने एक पर्णशाला बनायी, फिर उसमें उन्होंने
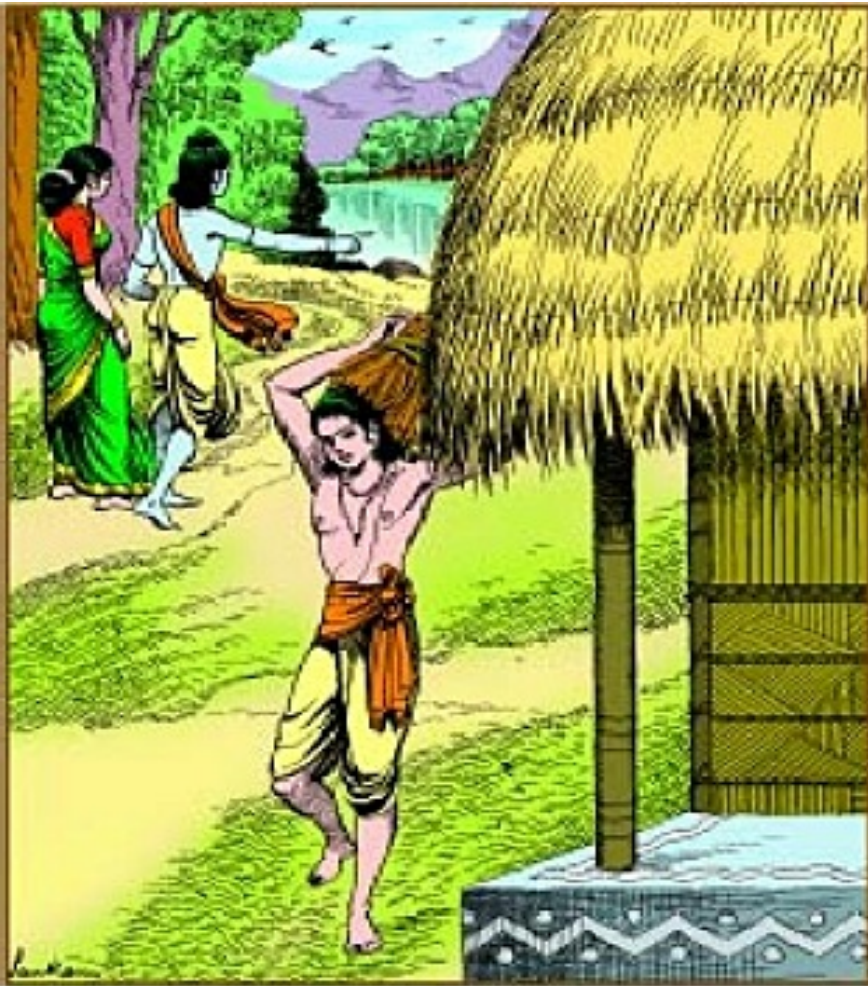
आवश्यक विभाग बनाये। गृह देवता को उन्होंने बलि भी दी।

राम और लक्ष्मण ने उसमें शास्त्रोक्त रीति से प्रवेश किया।

पास में बहनेवाली माल्यवती नदी में स्नान करते, सुन्दर वन में विचरण करते, नागरिक जीवन को भुलाकर आराम से वे समय काटने लगे।

उधर श्रृंगिबर पुर में गुह और सुमन्त्र, गंगा के किनारे जब तक सीता, राम, लक्ष्मण ओझल न हो गये, वहीं खड़े खड़े देखते रहे। फिर वे गुह के घर चले गये।

सुमन्त्र दो तीन रोज यह सोचकर कि राम कहीं अपना निश्चय बदल लें और फिर अयोध्या आना चाहें, वहीं रहा। जब वे न आये, तो वह अयोध्या के लिए रवाना हुआ। राम के अयोध्या छोड़ने के पाँच दिन बाद वह वहाँ पहुँचा।

रास्ते में खाली रथ को जाता देख, लोगों ने तरह तरह की बातें कहीं। सुमन्त्र सीधे कौशल्या के घर गया। सिंहासन पर बैठे दशरथ से राम ने जो कुछ कहा था बताया। वे बातें सुनकर दशरथ मूर्छित हो गये।

कौशल्या ने सुमित्रा की सहायता से दशरथ को उठाया। ''महाराजा, राम को वन में छोड़कर आया है, सुमन्त्र को वे जवाब तक नहीं देते? क्या इसलिए कि कहीं कैकेयी बुरा न मान ले। वह तो यहाँ नहीं है?'' दशरथ के साथ कौशल्या और अन्तःपुर की स्त्रियाँ भी रोयीं।

''मेरी आज्ञा का कितना महत्व है, मैं नहीं जानता। तुम जाकर राम को वापस ले आओ। नहीं तो मुझे राम के पास ले चलो।'' दशरथ ने कहा।

कौशल्या ने भी सुमन्त्र से राम के पास ले जाने के लिए कहा। सुमन्त्र ने कौशल्या को ढाढ़स दिया। उसने बताया कि राम, लक्ष्मण वनवास की अवधि आसानी से काट लेंगे। सीता को तो वह वन ही न लग रहा था। वे तो राम के साथ बहुत आनन्द में थीं। शायद राम के बिना अयोध्या ही उन्हें वन-सा प्रतीत होता।

अगले दिन कौशल्या दशरथ को जली कटी सुनाती रही। इस तरह वह अपनी व्यथा को कुछ कम कर सकी। दशरथ ने हाथ जोड़कर कहा कि वह जली कटी न सुनाये। कौशल्या पुत्र-शोक में तो थी ही, अब पछताने भी लगी।

राम के चले जाने के छठे दिन, जब उनकी मृत्यु कुछ घड़ियों में होनेवाली थी कि दशरथ को बचपन की एक घटना याद हो आयी। तब उसका कौशल्या से बिवाह न हुआ था। उसको शाप मिला था कि वह पुत्र-शोक में मर जायेगा। अब उसने कौशल्या से उस घटना के बारे में सब कुछ बताया।

उन दिनों दशरथ यौवन में था। वह ध्वनि सुनकर बाण छोड़ने में बड़ा निपुण था। इस शब्द बेधी नैपुण्य की हर कोई प्रशंसा करता।

तब दशरथ युवराज ही था। वह प्रायः रात में सरयू नदी के किनारे जाया करता। वह वहाँ एक ऐसा घाट देखता, जहाँ जंगली जानवर पानी पीने के लिए प्रायः आया करते। वह पास ही कहीं छुप जाता। पानी पीने की ध्वनि सुनकर वह बाण छोड़ता और इस तरह हाथी और मृगों का शिकार करता।

एक बार वर्षा ऋतु में, रात के समय घने अन्धकार में, दशरथ पशुओं की प्रतीक्षा करता छुपा बैठा था। उस समय नदी के किनारे बुड़ बुड़ ध्वनि हुई। यह सोच कि कोई हाथी पानी पी रहा था, उसने तेज बाण छोड़ा।

तुरंत एक मनुष्य का क्रोध और दर्द भरा स्वर सुनाई दिया, "आह! यह बाण? मुझ निरपराध पर? मैंने क्या कोईपाप किया है? हम जैसे तपस्या करनेवालों पर क्यों यह बाण छोड़ा गया है? मैंने किसी का क्या अपकार किया है? जो मुझे मार रहा है, उसे क्या मिलेगा? न मालूम कौन है, एक ही बाण से उसने तीन प्राण ले लिए? अगर मैं मर गया तो बूढ़े अन्धे मेरे माँ बाप कितने दिन जीवित रहेंगे? कैसे जीयेंगे?" दशरथ को यह सुनाई दिया।

उसने जाकर देखा तो एक मुनि बालक बाण की पीड़ा से छटपटा रहा था। वह पात्र, जो उसने पानी में डुबाया था, पास ही पड़ा था।

हतःप्रभ, स्तब्ध, दशरथ से उस मुनि बालक ने कहा, "क्यों तुमने यह नीच कार्य किया? तुम जाकर मेरे पिता से कहो कि मैं यहाँ हूँ। नहीं तो वे न जान सकेंगे कि मेरे साथ क्या हुआ है। अगर जान भी गये तो वे न आ सकेंगे। उनको प्यास लगी थी, इसलिए पानी लाने आया था और तुम्हारे बाण का शिकार हो गया। मैं यह पीड़ा सह नहीं सकता। पहले यह बाण खींच दो, फिर जाओ।"

लड़का दर्द के कारण छटपटा रहा था। बाण

निकाल दिया गया तो कहीं वह मर न जाये, यह सोच कुछ देर दशरथ खड़ा रहा। फिर उस लड़के के बहुत कहने पर उसने बाण निकाला। मुनि बालक ने तुरंत प्राण छोड़ दिये।

दशरथ उस लड़के के पात्र में पानी लेकर, उसके बताये हुए रास्ते से, उसके माँ-बाप के पास गया।

दशरथ की पगध्वनि सुनते ही बूढ़े ने सोचा कि उसका लड़का ही आ रहा है। ''बेटा, तुम्हें पानी लाने गये बहुत देरी हो गई। आओ। मुझे जल्दी पानी दो।''

''मैं आपका लड़का नहीं हूँ। दशरथ हूँ। क्षत्रिय हूँ।'' इसके बाद उसका गला रुंध गया। वह चुप हो गया। वह क्या कहे, कैसे कहे । एक ओर वह आत्म ग्लानि और पश्चाताप में डूबा जा रहा था और दूसरी ओर युवक की मृत्यु और उसके अन्धे माता-पिता के शोक की पीड़ा से उसका हृदय फटा जा रहा था। फिर भी हिचकते-हिचकते दशरथ ने अपने दुष्कृत्य के बारे में उनसे कहा।

उनके दुःख की सीमा न रही। दशरथ की सहायता से वे अपने लड़के के शव के पास गये। उस पर गिरकर वे बिलख बिलख कर रोने लगे।

बूढ़े मुनि ने कहा, ''तुमने हमारे इकलौते लड़के की निष्कारण हत्या करके हमें व्यर्थ में ही पुत्र - शोक दिया है। इसलिए तुम भी पुत्र-शोक में मरोगे। मैं यह तुम्हें शाप देता हूँ।''

फिर वे बूढ़े माँ-बाप अपने पुत्र की चिता में ही जलकर मर गये।

कितनी पुरानी यह घटना दशरथ को तब स्मरण हो आयी। उसे उसने अब कौशल्या को सुनाया।

कौशल्या से बातें कर रहे थे कि उनकी दृष्टि क्षीण होने लगी। धीमे-धीमे श्रवण शक्ति भी क्षीण होने लगी।

राम के लिए चिल्लाते, कैकेयी को कोसते आधी रात के समय उन्होंने प्राण छोड़ दिये।

तब राम को अयोध्या से गये हुए छः दिन हो चुके थे। उस समय अन्तःपुर की सब स्त्रियाँ, कौशल्या और सुमित्रा भी सो रही थीं। सारा नगर सो रहा था।

राजा की मृत्यु का समाचार अगले दिन सवेरे ही अन्तःपुर की स्त्रियों को मिला।

जब अन्तःपुर में रोना धोना होने लगा, तो और लोगों को भी मालूम हो गया। नगर में भी शीघ्र यह खबर फैल गई।

जल्दी ही वसिष्ठ आदि आये। दशरथ की अन्त्येष्टि क्रिया करने के लिए उनके लड़कों में से कोई भी न था। राम-लक्ष्मण वनवास कर रहे थे। भरत और शत्रुघ्न, भरत के मामा केकेय राजा के घर थे। इसलिए दशरथ का शरीर कुछ रसायनों में सुरक्षित रखा गया।

सिद्धार्थ, विजय, जयन्त, अशोक और नन्दन आदि को वसिष्ठ ने बुलाकर कहा, ''तुम जल्दी घोड़ों पर सवार हो केकेय राजा के पास जाओ। भरत से कहो कि यहाँ आवश्यक काम आ गया है और हमने बुलाया है। तुम उससे यह न कहना

कि राम वन गया हुआ है या दशरथ मर गये हैं।'' उसने भरत के लिए अच्छे वस्त्र, आभरण और कई वस्तुएं भेजीं।

वे अनेक नदियाँ, पर्वत पार करके लम्बी यात्रा के बाद भरत के मामा के देश में पहुँचे। भरत से मिलकर उन्होंने उसको वे भेंट दीं, जो उसके मामा और नाना के लिए भेजी गई थीं । वसिष्ठ ने जो कुछ कहा था, उसे उसी प्रकार सुनाया और तुरंत अयोध्या आने के लिए कहा।

भरत बड़ों से बिदा लेकर अयोध्या से जो उसके पास आये थे, उनके साथ बहुत-सी सेना लेकर निकल पड़ा।

बाकी लोगों को धीमे-धीमे आने दिया गया। भरत और शत्रुघ्न रथ में अयोध्या पहले पहुँच गये। उन्होंने सात दिन यात्रा की।

जिस दिन दूत अयोध्या से आये थे, उसी दिन रात को भरत ने एक अशुभ सपना देखा।

जब से उसने वह सपना देखा था, वह चिन्तित रहता था। अयोध्या पहुँचते ही फिर उसे वही चिन्ता सताने लगी, क्योंकि नगर में उत्साह और उल्लास न था। लोग भी दुःखी जान पड़ते थे। नगर उजड़ा-सा मालूम होता था। वातावरण में मौत का सन्नाटा, मनहूसियत और निर्जीवता छाई हुई थी। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों है। क्या नगर में कोई आपत्ति आ गई है?

भरत पहले अपने पिता के महल में गया। जब वे वहाँ न दिखाई दिये, तो माता के घर गया। लड़के को देखते ही कैकेयी आसन से उतरी। भरत ने उनके पैर छुए। उसे अपने पास बिठाकर उससे कुशल प्रश्न पूछे, ''तुम कब मामा के यहाँ से निकले? तुम्हारे मामा और नाना कुशल तो हैं? क्या तुम वहाँ आराम से रहे?''

भरत ने इन प्रश्नों का उत्तर न दिया, ''माँ, पिता जी कहाँ है? क्या वे बड़ी माँ कौशल्या के यहाँ हैं? मुझे उनके चरणों को प्रणाम करना है?''

''वे पितरों में मिल गये हैं, बेटा,'' कहकर कैकेयी ने उसको उनकी मृत्यु का समाचार दिय। यह सुनते ही भरत ढेर-सा हो गया। कैकेयी ने उसे आश्वासन देने का प्रयत्न किया।

दुष्टों से दूर रहो!

जनार्दन का पिता एक शहर में व्यापार करता था। उसने व्यापार में हज़ारों रुपये कमाये। अपना अंतिम समय निकट आया जानकर व्यापारी ने जनार्दन को बुलाकर समझाया, "बेटा, मेरे मरने के बाद तुम इस शहर में न रहो। कोई अच्छा स्थान देख अपना स्थायी निवास बना लो। मैंने जो कुछ कमाया, वह तुम्हें तथा तुम्हारे बच्चों के लिए आठ-दस पीढ़ियों तक काम देगा! तुम आराम से अपने दिन बिताओ।" यों समझा कर व्यापारी ने सदा के लिए अपनी आँखें मूँद लीं।

पिता के मरने के बाद जनार्दन के सामने एक बड़ी समस्या पैदा हो गई। वह यह कि किस प्रदेश में अपना स्थायी निवास बना ले? अपने गाँव में उसके साथ स्नेह और वात्सल्य दिखानेवाले लोग अनेक हैं, मगर वह गाँव उतना सुंदर नहीं। वहाँ पर पानी की अच्छी सुविधा नहीं, प्राकृतिक दृश्यों का अभाव है, उलटे वह पथरीला प्रदेश है।

यह सोचकर जनार्दन अपनी जायदाद को सोना तथा नक़द के रूप मे बदलकर एक अच्छे स्थान की खोज़ में चल पड़ा। दो हफ़्ते बाद उसको एक सुंदर प्रदेश पसंद आया।

समुद्र के किनारे स्थित वह एक छोटा सा देहात था। देहात के चारों तरफ़ झाऊ के बगीचे और रेतीले टीले थे। उस शीतल शांत वातावरण ने जनार्दन को आकृष्ट किया। वह झाऊ के बगीचे के बीच एक झोंपड़ी बनाकर वहीं स्थायी रूप से रहने लगा। रोज शाम को वह एक देहाती डोंगी में समुद्र पर घूमने जाता था।

उस देहात के लोगों का प्रमुख पेशा मछली पकड़ना था। वे जब भी अपने पेशे के लिए वहाँ से गुजरते थे तब जनार्दन को देखते थे। जब उन लोगों ने बिना मेहनत किये आराम से खा-पीकर सुख भोगनेवाले उस व्यक्ति को देखा तो उसके प्रति उन लोगों के मन में ईर्ष्या जग गई।

एक दिन दुपहर के वक़्त जनार्दन अपनी झोंपड़ी के सामने झाऊ के नीचे खाट डालकर लेट गया। बाहर कड़ी धूप पड़ रही थी। फिर भी झाऊ के उस बगीचे में ठण्डी हवा बह रही थी।

किसी की पुकार सुनकर जनार्दन चौंककर जाग पड़ा।

खाट के पास कोई आदमी खड़ा हुआ था। उसके तांबे के रंग की लंबी दाढ़ी थी। सिर मुड़ा हुआ था। लाल रंग का कुर्ता, काली धोती पहने हुए था। उसके गले में कौए के परों की माला पड़ी थी। उसकी आँखें लाल थीं, उसने मौन भंग करते हुए कहा, ''ऐ जवान लड़के! कड़ी धूप पड़ रही है। लोटे भर ठण्डा पानी लेकर आओ।'' जनार्दन पानी लाने झोंपड़ी के भीतर चला गया।

''ठहरो, नौजवान! गाढ़े मट्ठे में थोड़ा नमक मिलाकर लेते आओ। प्यास के मारे मेरी जीभ सूखती जा रही है।'' आगंतुक ने कहा।

जनार्दन ने कहा, ''अच्छी बात है! मैं आपके लिए पीने पानी ले आता हूँ'' कहकर वह भीतर जाने को हुआ।

''छाछ में नींबू का रस भी निचोड़ दो। स्वादिष्ट रहेगा।'' दाढ़ीवाला पुकार उठा।

जनार्दन दाढ़ीवाले के माँगने के अनुसार एक गिलास में छाछ, नमक और नींबू का रस निचोड़ कर ले आया।

तब तक दाढ़ीवाला जनार्दन की खाट पर बैठकर इतमीनान से गुनगुना रहा था। उसने गिलास हाथ में लेकर मट्ठा पी लिया, तब कहा, ''यह गिलास बड़ा सुंदर है। कोई हड़प लेगा। घर में रख आओ।''

जनार्दन गिलास को अंदर छोड़ बाहर आया तो देखता क्या है, दाढ़ीवाला खाट पर पैर पसार कर लेटा हुआ है। जनार्दन को अपने निकट आया देख बोला, "कड़ी धूप का वक़्त है! नींद आ रही है। थोड़ी देर सोकर उठूँगा।" यों कहते सो गया और कुछ ही मिनटों में खुर्राटे लेने लगा।

जनार्दन से कुछ कहते न बना। वह झोंपड़ी के बाहर एक चबूतरे पर बैठकर शाम तक अपना समय काटने लगा। संध्या होने पर दाढ़ीवाला जंभाइयाँ लेते हुए उठ बैठा, तब बोला, "अंधेरा हो चला है। अकेले की ज़िंदगी। घर में दिया तक जलानेवाला कोई नहीं।" यों कहते दाढ़ीवाला सीधे झोंपड़ी के भीतर चला गया और आले में स्थित दिया जलाया।

दाढ़ीवाले की यह करनी देख जनार्दन ख़ीझकर बोला, "खूब अंधेरा फैल गया है। अब तुम जा सकते हो!"

दाढ़ीवाले ने जनार्दन की ओर एड़ी से चोटी तक देख गरजकर कहा, "अबे, तुब कौन हो? मेरे घर आकर मुझ को ही दुतकारते हो? जाओ यहाँ से! वरना तुम्हारी बेइज़्ज़ती होगी।" इन शब्दों के साथ ज़बर्दस्ती जनार्दन को ढकेल कर दर्वाजे बंद कर लिये।

रात भर जनार्दन दरवाजे पर दस्तक देते झोंपड़ी के बाहर खड़ा रहा और सोचता रहा, 'यह अजीब स्थान है। मेरे ही घर से मुझे निकाल दिया और यह अनजान आगन्तुक मेरे घर में मालिक की तरह सो रहा है। यह स्थान शान्त और सुन्दर तो है, किन्तु यहाँ के रहनेवाले लोग भले नहीं लगते।' उधर दाढ़ीवाला यह कहकर बेख़बर सो गया, "मेरी झोंपड़ी के दरवाजे टूट जायेंगे तो उसकी क़ीमत तुम्हीं को चुकानी होगी।"
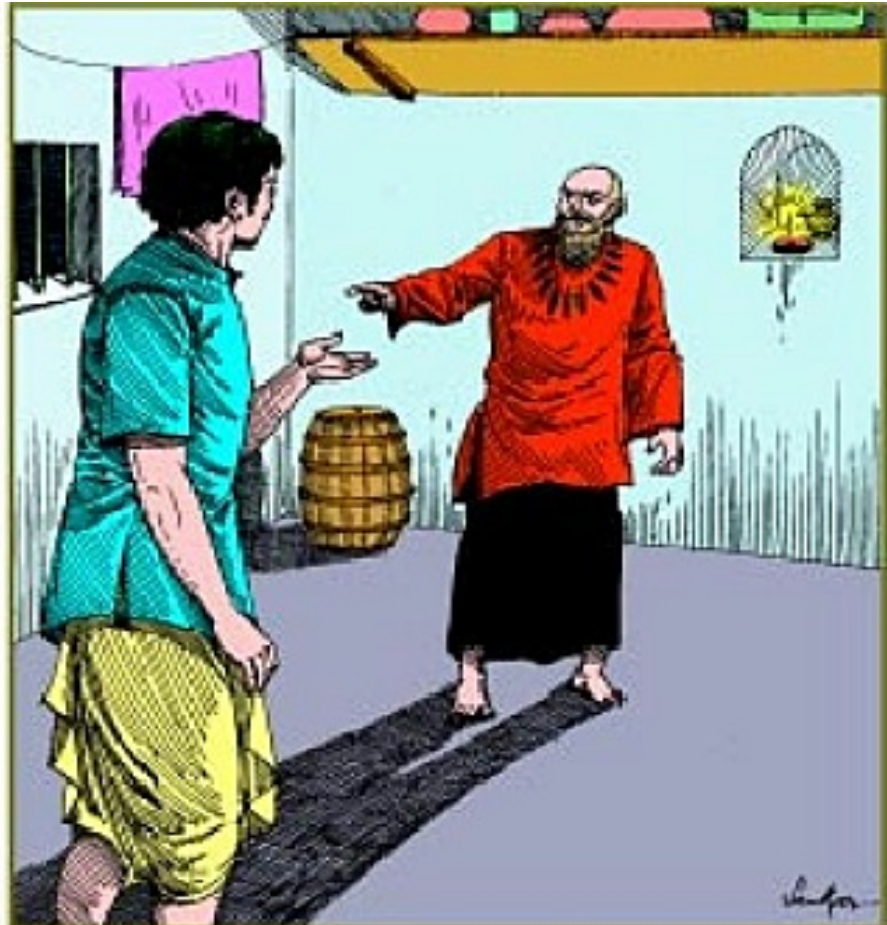
सबेरा हुआ। गाँव के लोग मछलियों का शिकार करने चल पड़े। उन सबको बुलाकर जनार्दन ने सारा वृत्तांत सुनाया और कहा, "आप लोग यह अन्याय देखते हैं न! इसको समझाते क्यों नहीं?"

इतने में दाढ़ीवाला दरवाजा खोल बाहर आया और गाँववालों से बोला, "यह कोई पागल लगता है। मेरे घर आकर हो-हल्ला मचा रहा है कि यह उसका घर है।"

जनार्दन गुस्से में आकर बोला, "आप लोग ही बताइए कि यह झोंपड़ी मेरी है या इसकी! आप लोग रोज़ इस ओर से गुजरते क्या मुझे इस घर में

देख नहीं रहे हैं? इस बदमाश को अच्छा सबक़ सिखाइये। और मेरे घर से इसे बाहर निकाल दीजिये।''

गाँववालों ने जनार्दन की ओर आपादमस्तक परख कर देखा और कहा, ''अरे कमबख़्त! तुम कौन हो? देखने में चोर लगते हो! यह घर इसी दाढ़ीवाले का है। हम रोज़ इसको देख रहे हैं। हमने आज तक तुमको नहीं देखा। तुम यहाँ से चुपचाप अपने रास्ते चलते बनो, वरना तुम्हारी हड्डी-पसली तोड़ देंगे।'' यों जनार्दन को धमकाया।

जनार्दन चकित रह गया। उसने भांप लिया कि सारे गाँववाले भले लोग नहीं हैं और ईर्ष्यावश उसकी सारी संपत्ति हड़पना चाहते हैं। उसने सब को डाँटते हुए पागल की तरह पथरायी आँखों से कहा, ''तुम लोगों ने आज मेरी आँखें खोल दीं। मैं आज तक इस घर को अपना समझ रहा था। क्या मैंने पेटी में जो सोना छिपा रखा है, वह मेरा नहीं?'' यों भोले बनकर उनकी तरफ़ देखा।

गाँववालों ने सोचा कि जनार्दन का दिमाग ख़राब हो गया है, तब सब ने व्यग्र होकर उससे पूछा, ''तुम्हारा नहीं। वह सारा सोना हम लोगों का है। जल्द बताओ, उस सोने को तुमने कहाँ पर छिपा रखा है?''

जनार्दन ने दूर पर दिखाई देनेवाले ऊँचे रेतीले टीले को दिखाकर कहा, ''सोने से भरी मेरी पेटी उस रेतीले टीले में है।''

तब क्या, सब लोग टीले की ओर भाग गये। सब ने उस सोने को अपना बनाना चाहा। दाढ़ीवाले के साथ जब गाँव के सभी लोग टीले की ओर भाग खड़े हुए, तब जनार्दन ने इतमीनान से निश्वास लिया, झाऊ के तने में गाड़कर रखी गई सोनेवाली पेटी को निकाला। उसी वक़्त जनार्दन अपना सारा सामान लेकर वहाँ से निकलकर कहीं दूर चला गया।

जनार्दन को तब पता लगा कि उसके पिता ने अच्छे स्थान की जो बात बताई थी, उसका अर्थ अच्छे लोगों के बीचजा बसना है। वह अपने गाँव में वापस लौट गया। उन लोगों के बीच सुखपूर्वक अपना शेष जीवन बिताने लगा।

चित्र: गाँधी अय्या
10
अपराजेय गरुड़
आम पुरुष द्वारा भेजी गई और वज्रपुरी के प्रधानमंत्री पुष्पराज की निगरानी में लाई गई आदिवासी स्त्री चन्द्रपुरी के महल में प्रवेश करती है, जहाँ अरुणा का व्यवहार आदित्य को विस्मय में डाल देता है। क्या अरुणा किसी मतिभ्रम के प्रभाव में है?
माला! राजकुमारी चीख रही है कि हमारे राजकुमार की मौत हो जायेगी।
ओ रेखा! मेरी रामसिंह से भेंट हुई। उसने कहा कि विवाह स्थगित हो गया है!
इस बीच आदित्य राजसी अतिथियों से मिलता है।
हमलोगों के राजा इस दुखद समाचार को घोषित करने की मानसिक अवस्था में नहीं हैं कि...
....मेरा विवाह स्थगित हो गया है। दुल्हन अचानक अस्वस्थ हो गई है। राज्याभिषेक भी टाल दिया गया है।
हम चाहते हैं कि आप में से कुछ के यहाँ कुछ दिन रहकर हमारे आतिथ्य का आनन्द लें।
मैं सोचता हूँ कि यहाँ रुक जाऊँ।
मैं कुछ दिनों से यहाँ हूँ। मैं अब लौट जाना चाहता हूँ।
आदित्य और रामसिंह अतिथियों को कक्ष से बाहर निकलते हुए देखते हैं।
कम से कम राज्याभिषेक सम्पन्न कर देना चाहिये था।
मेरा भी यही विचार था।
मुझे अपने अच्छे मित्र नरेन्द्रदेव से मिल लेना चाहिये, खासकर जब वह संकट में है।
उसे स्मरण है कैसे उसने जब आप दोनों छात्र थे आप के प्राणों की रक्षा की थी।

अतिथियों के जाने के बाद...

रामसिंह पहरेदारों से पूछताछ करता है।

रामसिंह दो पालकियों को महल के प्रवेशद्वार की ओर आते हुए देखकर द्वार मण्डप की ओर मुड़ता है।

पालकियाँ द्वारमण्डप पर रुकती हैं। रामसिंह राजगुरु और ज्योतिषी के स्वागत के लिए आगे बढ़ता है।

राजा महेन्द्रवर्मा राजगुरु तथा ज्योतिषी का स्वागत करते हैं।
एक बुरी खबर है। आज का विवाह और कल का राज्याभिषेक उत्सव स्थगित हो गया है।
क्या हो गया?
मंगल मुहूर्त्त बहुत हैं और आप उनमें से किसी एक का चुनाव कर सकते थे।
जब तुम्हारे सन्देशवाहक ने मुझे कहा कि मेरी तुरन्त जरूरत है तब मैं समझ गया कि कुछ गड़बड़ है।
अरुणा बड़े रहस्यमय ढंग से बीमार पड़ गई है।
रहस्यमय?
कल वह बिलकुल स्वस्थ थी, किन्तु आज सुबह मतिभ्रम के साथ उठी!
मुझे विश्वास है कि यदि उसे आदित्य से मिलने दें तो वह शीघ्र ही स्वस्थ हो जायेगी।
ज्योतिषी जी, क्या इन उत्सवों के लिए नई तिथियाँ निर्धारित कर सकते हैं?
अवश्य !
लेकिन आपने पहले उनकी जन्मकुण्डलियों की जाँच कर ली थी न?
हाँ, कर तो ली थी, फिर भी, मैं पुनः उन्हें देखूँगा।
ज्योतिषी ताड़ पत्रों की गठरी खोलता है और उन्हें अध्ययन करता है।
नहीं, आज के विवाह में कोई बाधा दिखाई नहीं देती। फिर भी, राजकुमारी के स्वस्थ होने तक प्रतीक्षा करते हैं।
क्योंकि विवाह स्थगित हो गया है, आदित्य अरुणा से मिलने जा सकता है।
विवाह राज्याभिषेक से पहले ही होना चाहिये।
यह अत्यावश्यक है।

रामसिंह बातचीत के बीच में बोल पड़ता है।
महाराज! मैं एक खबर लाया हूँ। कल शाम को एक आदिवासी स्त्री महल में प्रवेश कर गई।
तुम्हें यह कब मालूम हुआ?
महाराज! मैंने पहरेदारों से बातचीत की। उन्होंने कहा कि घोड़े पर सवार दो व्यक्ति आये थे। वज्रपुरी के प्रधानमंत्री के साथ एक स्त्री थी।
क्या वह अरुणा से मिली? अभी वह कहाँ है?
पहरेदारों के मुताबिक वह औरत महल से बाहर नहीं गई है, इसलिए उसे अन्दर ही होना चाहिये।
क्या अरुणा के कमरे से धुआँ आने का कारण वह बन सकती है, मुझे सन्देह है?
रामसिंह, आदित्य को बुलाकर ले आओ। उसे यह खबर तुरन्त मिलनी चाहिये।
मुझे भी कुछ सन्देह था, महाराज! मैं आदित्य को लेकर आता हूँ।
जब रामसिंह चला जाता है...
मुझे यह सब सुनकर दुःख हो रहा है, महेन्द्र! आशा है, राज का पर्दाफाश जल्दी ही हो जायेगा।
महल में घुसपैठिया! कितना भयानक हो सकता है!
एक आदिवासी औरत की मौजूदगी! अरुणा के कक्ष में धुआँ! मुझे तो अरुणा और आदित्य के प्राणों का भय है। ज्योतिषी जी, आप उनकी कुण्डलियों को विस्तार से देखिये। हमलोग फिर मिलते हैं।
क्रमशः

खासी धन्यवाद - निवेदन

मेघालय की आदिवासी आबादी में खासी जाति का प्रमुख स्थान है। उनका पाँच दिवसीय शाद नांगक्रेम पर्व बहुत महत्वपूर्ण उत्सव होता है, जो अच्छी फसल के बाद धन्यवाद निवेदन के रूप में मनाया जाता है। यह नवम्बर में शिलांग के निकट स्मिट में मनाया जाता है जब सर्वशक्तिमान देवी *का -ब्ले-श्यानोंह* की पूजा की जाती है। कभी बकरे की बलि विस्तृत अनुष्ठानों का अंग हुआ करती थी। बकरे *सी एम* अथवा समुदाय के प्रशासनिक प्रमुख की प्रजाओं द्वारा लाये जाते थे । अब इसका प्रचलन बन्द कर दिया गया है।

'राजा' की सबसे बड़ी बहन, जिसे *का सी एम साद* कहा जाता है, मुख्य पुजारिन होती है, जो समारोहों की अध्यक्षता करती है। ये समारोह वाद्यों की रानी लम्बे तांगमुरी पाइप्स के शुद्धीकरण से आरम्भ होते हैं । धार्मिक अनुष्ठानों के बाद सभी पाँचों दिन नांगक्रेम नृत्य किया जाता है। खासी नर-नारी परम्परागत चमक-दमक के साथ बाहर निकलते हैं। पुरुष रंगीन रेशमी धोती, कोट तथा पंखदार पगड़ी पहने चमकीले अलंकारों से सजे होते हैं। वे एक हाथ में कृपाण अथवा भाला रखते हैं और दूसरे हाथ में याक के श्वेत बालों का चंवर। स्त्रियाँ शानदार रेशमी वस्त्रों में सज्जित सोने चाँदी के बने जटिल नक्काशीवाले आभूषणों के साथ चाँदी के मुकुट पहने प्रकट होती हैं।

नृत्य का नेतृत्व *सी एम साद* द्वारा किया जाता है जिनके ऊपर एक छत्र होता है। इसे शाही नृत्य कहा जाता है। उसके चारों ओर अविवाहित लड़कियाँ वृत बना कर छोटे-छोटे कदमों के साथ दो-दो तथा तीन-तीन के समूह में नाचती हैं।

बाहरी वृत युवा पुरुषों द्वारा बनाया जाता है जो प्रबल कदमों के साथ अपने कृपाण और भाले भांजते हैं। वे सब समय का ध्यान रखते हुए ढोलों और तंगमुरी की ताल पर नाचते हैं। यह त्योहार पाँचवें दिन सृष्टिकर्ता को अर्पित *सी एम* द्वारा निवेदित प्रार्थना के साथ समाप्त हो जाता है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

इस्तरी क्यों करें?

सिलवट पड़े वस्त्र की अपेक्षा साफ और सिलवट रहित पोशाक किसी को भी आकर्षक बना देती है। इसलिए हमलोगों में से महासुस्त भी इस्तरी किये हुए कपड़े पहनना पसन्द करेगा। कुछ वस्त्रों को छोड़कर जिन्हें सिलवट प्रतिरोधी बनाने के लिए निर्माण के समय विशिष्ट प्रक्रिया से निकाला जाता है, सभी कपड़ों में उन्हें धोते समय सिलवटें पड़ जाती हैं।

गर्मी और दबाव पड़ने पर जहाँ-तहाँ तहों के मोड़ों पर सिलवटें बन जाती हैं। यह सामान्य तौर पर तब होता है जब हम बैठते या लेटते हैं और कपड़े ढीले होते हैं। बुनावट में धागों का खिंचाव सिलवट का कारण होता है। खिंचाव से धागे एक दूसरे से आगे निकल जाते हैं या गठ्ठर बना लेते हैं।

इस्तरी करने से उलझे धागों पर फिर एक बार गर्मी और दबाव पड़ता है। गर्मी से जब कि रेशों और बुनावट में नरमी आ जाती है, इस्तरी तथा हाथ के दबाव से धागे फिर से अपनी मौलिक स्थिति में वापस आ जाते हैं।

तुम्हारा प्रतिवेश

सेलफोन शिष्टाचार

सुविधाजनक सामानों की सूची में नवीनतम है सेलफोन। यद्यपि यह भारत में अपेक्षाकृत नया विचार है, फिर भी इसकी लोकप्रियता बहुत तेजी से बढ़ रही है। वास्तव में कुछ लोगों को इस बात पर आश्चर्य होता है कि सेलफोन के पूर्व लोग कैसे काम चलाते थे।

क्या तुम जानना चाहोगे कि सेलफोन शिष्टाचार क्या है? अच्छा तो ठीक है, इसे पढ़ोः रिंगर को यथा सम्भव धीमा रखो।

यदि तुम किसी मीटिंग में बैठे हो तो तुम्हें दूसरों को बता देना चाहिये कि तुम्हारा फोन आ सकता है। और बात करने के लिए स्वीकृति ले लेनी चाहिये।

कोशिश करो कि तुम्हारी बातचीत संक्षिप्त हो। फोन पर चीखना-चिल्लाना नहीं चाहिये। भद्र बने रहो।

वाहन चलाते समय सेलफोन का उपयोग न करो। यह बहुत खतरनाक है। और, छात्रों के लिए: सेलफोन लेकर स्कूल न जाओ।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

क्रोकोबाइल

जब भी मोबाइल पर बीप की ध्वनि सुनते हो तब तुम जानते हो कि कोई सन्देश आया है। खैर, जो भी हो, क्या तुम उम्मीद करोगे कि कोई विशाल क्रूर मगरमच्छ सन्देश भेजेगा। किन्तु यदि तुम हेन्स बोथा की तरह वैज्ञानिक हो तो शायद तुम आशा कर सकते हो। डॉ. बोथा इन प्राणियों का अध्ययन कर रहे हैं और इन्हें नियमित अन्तराल पर एक बृहत मगरमच्छ से सन्देश मिलते रहते हैं। सन्देश में मगरमच्छ का कोड तथा भौगोलिक पता के साथ-साथ तिथि और समय दिया रहता है। यह सन्देश एक सेलफोन और एक ग्लोबल पोज़िशनिंग फोन से आता है जो मि.मगरमच्छ के सिर के पिछले हिस्से में हड्डीनुमे छिलके से लगे १२ से.मी.के सिलेण्डर में फिट किये हुए हैं।

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी

आयें, भारतीय गणित तथा विज्ञान के क्षेत्र में कुछ महान हस्तियों को याद करें !

१. आर्यभट्ट किसलिए प्रसिद्ध था?

२. किस राजा ने जयपुर, राजस्थान में प्रसिद्ध बेध-शाला का निर्माण करवाया? इसका नाम क्या है?

३. किस भारतीय वैज्ञानिक ने पहले नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया?

४. डॉ.मेघनाद शाह का विज्ञान को कौन-सा प्रसिद्ध योगदान था?

५. गणित का मेधावी युवा प्रतिभा कौन था जो युवा वस्था में काल कवलित हो गया?

(उत्तर ६६ पृष्ठ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

KALANIKETAN BALU

MAHANTESH C. MORABAD

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

मधु भाटी,
यूनियन बैंक आफ इंडिया
श्री अमीर गढ़,
जि. बनासकांठा (गुजरात),
पिन - ३८५१३०.

विजयी प्रविष्टि

बछड़ा कितना प्यारा! कर लूँ इसको प्यार।
हे डायनासोर ! तू है कितना खूंखार !

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी के उत्तरः

१. उसने बीजगणित की आधारशिला रखी और 'शून्य' की महत्ता बतायी।

२. महाराजा जयसिंह- द्वितीय; राशिवलय बेधशाला।

३. डॉ.सी.वी.रमन, भौतिक शास्त्र में, सन १०३० में।

४. शरीरों के माध्यम से विकिरण के प्रभाव को स्थापित किया।

५. श्रीनिवास रामानुजम।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor: B. Viswanatha Reddi (Viswam)

कार पूल्स के लाभ

शेखर चिन्तित था। पेट्रोल की कीमतों में बारम्बार वृद्धि से उसका पेट्रोल का खर्च बढ़ता जा रहा था। एक दिन शाम को, उसका दस वर्षीय बेटा बोला, ''पिता जी, क्या आप समाधान करने के लिए कोई समस्या देंगे?''

''अपने पिता को परेशान न करो!'' उसकी माँ विद्या ने कहा, ''सुनो, तीन मित्र-राम, राज, रघु अपनी कार से छुट्टी को छोडकर सब दिन विकास नगर से एम.जी.रोड पर अपनी ऑफिसेज जाते तथा वापस आते हैं। आने-जाने की दूरी ३० कि.मी. है। कारें एक लीटर में १५ कि.मी. जाती है। यदि पेट्रोल का मूल्य ५० रु. प्रति लीटर है तो प्रति सप्ताह पेट्रोल पर उनका कुल खर्च कितना होगा?''

''प्रति सप्ताह १८०० रुपये!'' स्मार्ट लड़के ने झट जवाब दिया। ''किन्तु'', अनिरुद्ध बोलता गया, ''यदि उन्हें एक ही गन्तव्य तक जाना है तो वे एक साथ क्यों नहीं चले जाते?''

''वाउ!'' शेखर उछल पड़ा। ''मान लो, एक को एम.जी. रोड़ जाना है, दूसरे को जे. एन.रोड जाना है और तीसरे को शास्त्री रोड जाना हो तो?''

''तो क्या हुआ?'' लड़के ने कहा। ''सबसे दूर गन्तव्य शास्त्री रोड होगा। फिर भी, वे एक साथ यात्रा करके काफी पैसों की बचत कर सकते हैं।''

''क्यों नहीं तुम कोशिश करके देखते, शेखर?'' विद्या ने कहा। ''तुम मोहन और रवि के साथ मिल कर कार पूल बना सकते हो, हालांकि उनकी आफिसेज तुम्हारी ऑफिस के पास नहीं है।''

प्रबुद्ध शेखर ने दूसरे दिन से ही ठीक वैसा ही किया और उसने बहुत पैसे बचाया। यदि ऐसे कार पूलों की व्यवस्था की जाये तो आप केवल पैसे ही नहीं बचायेंगे बल्कि यातायात की भीड़भाड़ को और प्रदूषण को भी कम करेंगे। यदि पेट्रोल की कुल खपत कम होगी तो अप्रत्यक्ष रूप से इससे राष्ट्र को लाभ होगा।

CHANDAMAMA (Hindi) Nov. 2006 RNI No. 1087/57. Regd No. TN/CC(S)Dn/163/06-08
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/06-08, Foreign No. 93/06-08